ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक-संरक्षक वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं.श्रीराम शर्मा आचार्य एवं स्नेह सलिला माता भगवती देवी शर्मा

E-mail : news@pragyaabhiyan.info Website : www.pragyaabhiyan.info Phone - 09258369725 Fax : 01334-260866

वर्ष-२३, अंक-२३ । १ जून २०११ । शांतिकुंज, हरिद्वार । वार्षिक चंदा ₹ ३०/-, विदेश में ₹ ४००/-

मानवीय चेतना पर सूर्य का प्रभाव

इक्कीसवीं सदी में सूर्य तेजस् में भी अनुकूल परिवर्तन होगा और उसका प्रभाव समस्त वातावरण पर पड़ेगा। प्राणियों में भी क्षमता और चेतना विकसित होगी। ईंधन का, विद्युत का, रोग नियंत्रण का समुद्र से पानी लाकर मेघ बरसाने, वायु संशोधन का काम तो सूर्य अभी भी करता है। सड़ी हुई दुर्गन्ध को मिटाने और विषाणुओं का हनन करने में उसके चमत्कार निरंतर देखे जाते हैं। शरीरों में विटामिन 'डी' का उत्पादन स्रोत वही है।

अगले दिनों उसकी प्रखरता चेतना क्षेत्र को भी प्रभाव में लेगी। गिरों को उठाने और उठों को उछालने में जहाँ मानवी प्रयत्न काम करेंगे, वहाँ उसे सफल सम्भव बनाने में सविता की अदृश्य भूमिका भी काम करेगी। आद्यशक्ति गायत्री का अधिष्ठाता भी तो सविता ही है। उसी के प्रतीक रूप में दीपक की ज्योति के, अगरबत्ती के रूप में प्रतिष्ठित किया जाता है। **(वाङ्मय खण्ड-२८/ ४.९)**

सविता का सहज ध्यान

प्रस्तुत युग साधना में अन्य क्रिया-कलाप तो साधारण अनुष्ठानों की भाँति ही रहेंगे, पर एक बात विशिष्ट रहेगी 'सूर्योपस्थान'-भगवान सूर्य की निकटता। उन्हें ही इस महान् प्रक्रिया का अधिष्ठाता वरण किया गया है। इसलिए जप गायत्री का, पूजन गायत्री का करते हुए भी प्रातःकाल उदय होते हुए स्वर्णिम आभा वाले सविता देव का ध्यान करते रहना होगा। ध्यान ही नहीं, प्राण प्रत्यावर्तन का भाव समर्पण भी। साधक का प्राण सविता में प्रवेश करके वैसा ही लाल हो जाता है, जैसा भट्ठी में कुछ समय पड़ा रहने के उपरांत सोना लाल हो जाता है। यह समर्पण हुआ।

दूसरा भाग है सविता का साधक की सत्ता में अवतरण। जिस प्रकार किरणें धरती पर उतरती हैं और प्रभाव क्षेत्र को ऊर्जा एवं आभा से भर देती हैं, उसी प्रकार साधक भी अनुभव करेगा कि सविता का ओजस, तेजस, वर्चस बरसता है और उपासनारत को अपने दिव्य अनुग्रह से ओतप्रोत कर देता है।

गहरी साँस लेते हुए सूर्य के अवतरण की ओर धीरे-धीरे साँस छोड़ते हुए सूर्यार्घ्य दान की तरह सविता को आत्म-समर्पण करने की भावना करते रहना चाहिए। **(वाङ्मय खण्ड-२८/ ४.९)**

ईश्वर का सर्वोपरि अनुदान-सद्बुद्धि, सद्विवेक, सत्साहस

जहाँ सुमति तहाँ सम्पत्ति नाना

दिग्भ्रान्त मनुष्य अपने को समझदार मानते हुए भी कुचक्र में फँसते और भटकाव के कारण पग-पग पर ठोकरें खाते हैं। दुर्बलता, रुग्णता, दरिद्रता, शत्रुता, मूर्खता, आशंका जैसे कितने ही कारण ऐसे हैं जो दुःखों को बढ़ाते और त्रास देते रहते हैं। इन सब के मूल में एक ही विपत्ति सर्वोपरि है जिसका नाम है- अदूरदर्शिता। अविवेक भी इसी को कहते हैं। अनाचार भी इस कारण बनते हैं। गुण, कर्म, स्वभाव में निकृष्टता इसी कारण घुस पड़ती है। जैसे जड़ में से अनेक टहनियाँ, पत्तियाँ फूटती हैं, उसी प्रकार एक अविवेकशीलता का बाहुल्य रहने पर कारणवश या अकारण ही समस्याओं में उलझना और विपत्तियों में फँसना पड़ता है।

सद्ज्ञान को समस्त विपत्तियों का निवारक माना गया है। रामायण का कथन है कि ''जहाँ सुमति तहाँ सम्पत्ति नाना।'' अर्थात् जहाँ विचारशीलता विद्यमान रहेगी, वहाँ अनेकानेक सुविधाओं-सम्पदाओं की श्रृंखला अनायास ही खिंचती चली आयेगी।

अपना विवेक साथ हो तो आशा और विश्वास के बल पर कष्टसाध्य रोगों के रोगी बीमारियों से लड़ते-लड़ते देर-सबेर चंगे हो जाते हैं, जबकि शंकालु, डरपोक और अशुभ चिंतन करते रहने वाले साधारण रोगों को ही तिल का ताड़ बनाकर मौत के मुँह में जबरदस्ती जा घुसते हैं। देखा गया है कि अशुभ चिन्तन के अभ्यासी अपना जीवट और साहस अनुपयुक्त आदतों के कारण ही गँवाते रहते हैं। कठिनाइयाँ और अड़चनें हर किसी के जीवन में आती हैं, पर उनमें से एक भी ऐसी न होगी जिसे धैर्य और साहसपूर्वक लड़ते हुए परास्त न किया जा सके। सहनशीलता एक ऐसा गुण है जिसके साथ धैर्य भी जुड़ा होता है और साहस भी। आजीवन जेल की सजा पाये हुए कैदी भी उस विपत्ति को ध्यान में न रखकर घरेलू जैसी जिन्दगी जी लेते हैं और अवधि पूरा करके वापस लौट आते हैं। सुनसान बीहड़ों में खेत या बगीचे रखाने वाले निर्भय होकर चौकीदारी करते रहते हैं, जबकि डरपोकों को घर में चुहिया की खड़बड़ भी भूत-बला के घर में घुस आने जैसी डरावनी प्रतीत होती है। शत्रु किसी का उतना अहित नहीं कर पाते जितनी उनके द्वारा पहुँचाई जा सकने वाली हानि की कल्पना संत्रस्त करती रहती है।

कुछ लोग गरीबी के रहते हुए भी हँसती-हँसाती जिंदगी जी लेते हैं, जबकि कितनों के पास पर्याप्त साधन होते हुए भी तृष्णा छाई दिखती रहती है। यह मन का खेल है। हर किसी की अपनी एक अलग दुनिया होती है, जो उसकी अपनी निज की संरचना ही होती है। परिस्थितियों और साथियों का इस निर्माण कार्य में यत्किंचित सहयोग ही होता है। जीवन गीली मिट्टी की भांति है, कोई जैसा भी कुछ चाहे, गीली मिट्टी की तरह उसे आकृति दे सकता है।

बदलाव विचारों का होना चाहिए

पदार्थों का बदलाव सरल है। लोहे तक को गलाकर दूसरे ढाँचे में ढाला जा सकता है। वेश-विन्यास से कुरूप को भी रूपवानों की पंक्ति में बिठाया जा सकता है, पर विचारों का क्या किया जाय जो चिरकाल से बन पड़ते रहे कुकर्मों के कारण स्वभाव का अंग बन गये हैं और आदतों की तरह बिना प्रयास के चरितार्थ होते रहते हैं। सभी जानते हैं कि नीचे गिराने में तो पृथ्वी की आकर्षण शक्ति ही पूरा-पूरा जोर हर घड़ी लगाये रहती है, पर ऊँचा उठने या उठाने के लिए तो आवश्यकता के अनुरूप समर्थ साधन चाहिए। इस निमित्त सामर्थ्य भर जोर लगाना पड़ता है।

श्रेष्ठ काम कर गुजरने वालों में आततायी वर्ग द्वारा प्रयुक्त हाने वाली शक्ति की तुलना में सैकड़ों गुनी अधिक सामर्थ्य चाहिए। किसी मकान को एक दिन में नष्ट किया जा सकता है और इसके लिए एक फावड़ा ही पर्याप्त हो सकता है। पर उसे नये सिरे से बनाना हो तो उसके लिए कितना समय, कितना कौशल लगाना पड़ेगा, इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। श्रेय ध्वंस को नहीं, सृजन को ही मिलता रहा है।

इन दिनों एक ही बड़ा काम सामने है कि जन-जन के मन-मस्तिष्क पर छाई हुई दुर्भावना के निराकरण के लिए कितना बड़ा, कितना कठिन, कितने शौर्य पराक्रम की अपेक्षा रखने वाला पुरुषार्थ जुटाया जाना चाहिए। यह कार्य मात्र उपदेशों से भी तो नहीं होगा। इसके लिए तद्नुरूप वातावरण चाहिए। फिर उपदेष्टा का व्यक्तित्व ऐसा चाहिए जो अपने कथन व अपने व्यवहार में उतरने की कसौटी पर हर दृष्टि से खरा उतरता हो। बढ़िया बंदूक ही सहज निशाना लगाने में समर्थ होती है। टेढ़ी-मेढ़ी अनगढ़ नहीं। बालक का तमंचा प्रायः असफल निशाना ही लगाता रहता है। सदाशयता और सद्भावना का निजी जीवन में परिचय देने वाले ही दूसरों को ऊँचा चढ़ाने, आगे बढ़ाने और सृजनात्मक प्रयोजनों को पूरा कर पाने में समर्थ हो पाते हैं।

विचार क्रांति आज की सर्वोपरि आवश्यकता है। हेय चिन्तन ही दरिद्रता, अशिक्षा, अस्वस्थता, कुचेष्टा और दुष्प्रवृत्तियों का परिणाम है। इन बीमारियों का अलग-अलग इलाज कारगर नहीं हो सकता। रक्त शोधक उपचार करने से ही आये दिन उगने वाले फोड़े-फुंसियों से छुटकारा मिलता है। जड़ सींचने से ही पेड़ हरा होता है। वह कार्य पत्तों को पोसने से पूरा होना सम्भव नहीं।

विकास और सुधार के लिए तो अनेकानेक प्रकार के काम करने को पड़े हैं, पर यदि उन सबको समेटने की अपेक्षा विचारों का तारतम्य सही बिठा लिया जाय तो अन्यान्य बहुमुखी विकृतियों पर सहज काबू पाया जा सकता है। विचारों से ही कार्य विनिर्मित होते हैं। इन्हीं के कारण उत्थान-पतन भी भूमिका दृष्टिगोचर होती है। यदि विचारों को शालीनता, सज्जनता, नीति-निष्ठा, कर्त्तव्यपराणयता और समाजनिष्ठा की दिशा में उन्मुख किया जा सके, तो फिर शरीर एवं साधनों के माध्यम से मात्र वे ही कार्य बन पड़ेंगे, जो सुधार एवं विकास के लिए आवश्यक हैं।

आस्था की अग्नि परीक्षा

प्रश्न इन दिनों सर्वथा दूसरी प्रकार का है। देखा जाना है-स्वार्थ के मुकाबले में परमार्थ सुहाता किसे है? सृजन और उन्नयन के लिए किसकी सद्भावना किस हद तक उभरती है? ध्वंस करने वाले जिस प्रकार मूँछों पर ताव देते हैं और शेखी बघारते हैं, वैसा अवसर सृजन कर्मियों को कहाँ मिलता है? निर्माणकर्त्ताओं की मंद-गंध चंदन जैसी होती है जो बहुत समीप से ही सूँघी जा सकती है, पर ध्वंस की दुर्गन्ध तो अपने समूचे क्षेत्र को ही कुरुचि से भर देती है और अपनी उपस्थिति का दूर-दूर तक परिचय देती है। दुष्टता भरी दुर्घटनाएँ दूर-दूर तक चर्चा का विषय बन जाती हैं, पर सेवा-सद्भावना से भरे कार्य कुछेक लोगों की जानकारी में ही आते हैं। इतने पर भी उन्हें वैसा विज्ञापित होने का अवसर नहीं मिलता है जैसा कि दुष्ट दुराचारी अपने नाम की चर्चा दूर-दूर तक होती सुन लेते हैं और अहंकार को फलितार्थ हुआ देखते हैं।

इन परिस्थितियों में सत्प्रवृत्ति संवर्धन जैसे सत्प्रयोजनों के लिए किन्ही दूरदर्शी और सद्भावना सम्पन्नों के कदम ही उठते हैं। अनुकरण के प्रत्यक्ष उदाहरण सामने न होने पर अपना उत्साह भी ठंडा होता रहता है। संचित कुसंस्कारों से लेकर वर्तमान प्रचलनों के अनेकों अवरोध इस मार्ग में अड़ते हैं कि फूटे खण्डहरों जैसी व्यवस्थाओं को किस प्रकार नये सिरे से भव्य भवन का विशाल रूप देने की योजना बनाई जाय? इसके लिए निरन्तर कार्यरत रहने और आवश्यक साधन जुटाने की हिम्मत कैसे जुटाई जाय?

युगऋषि पं.श्रीराम शर्मा आचार्य (वाङ्मय खण्ड-२८, सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण भाग-१ के पृष्ठ ३.१५, १६, १७ से संकलित-संपादित)

गायत्री जयंती पर गायत्री महाविद्या-सद्बुद्धि की प्रार्थना जन आन्दोलन बने

जन्म शताब्दी पर 'नयी गायत्री' उज्ज्वल भविष्य हेतु प्रेरक संकल्प जनमानस में जागे

युग प्रवाह का लाभ लें भी-दें भी

युग परिवर्तन की दिव्य चेतना की सक्रियता का प्रभाव इन दिनों विभिन्न रूपों में सभी जगह दिखाई दे रहा है। नये-नये रूपों में उसकी नयी-नयी तरंगों को विश्व के सभी भूभागों और समाज के सभी वर्गों में उभरता, सक्रिय और तीव्रतर होता अनुभव किया जा सकता है।

प्रकृति जब मौसम बदलती है तो उसका प्रभाव सभी जगह दिखाई देने लगता है। गर्मी आने पर वस्तुओं का ठंडा तथा सर्दियों में गर्म रखना तमाम कोशिशों के बावजूद भी मुश्किल हो जाता है। वर्षाकाल में हर वस्तु अनायास ही नम होने लगती है। अनुकूल मौसम आने पर बिना खेत में बोये भी बीज अंकुरित होने लगते हैं।

इन दिनों नवसृजन चेतना भी अपनी सक्रियता इसी प्रकार के मौसमों जैसे प्रवाह पैदा कर रही है। एक ओर *'विनाशाय च दुष्कृताम्'*- दुष्टता एवं भ्रष्टता को उघाड़ने और दण्डित करने के प्रत्यक्ष-परोक्ष प्रवाह तेज होते दिख रहे हैं, तो दूसरी ओर *'परित्राणाय साधूनाम्'* के क्रम में सदाशयता सम्पन्नों के मनों में कुछ नया-कुछ बेहतर करने के उत्साह रूपी अंकुर स्वाभाविक रूप से उभर रहे हैं।

इस दिव्य प्रवाह से जो जुड़े हैं और जुड़ेंगे, वे जन्म-जन्मांतरों के लिए श्रेय-सौभाग्य के सच्चे अधिकारी बनने का लाभ सहज ही उठा सकेंगे। हर समझदार-जाग्रतात्मा को इन दिनों इस दिव्य मौसम का लाभ उठाने के लिए स्वयं तो नैष्ठिक प्रयास करने ही चाहिए, अपने प्रभाव क्षेत्र, संपर्क क्षेत्र के नर-नारियों को भी यह असाधारण लाभ उठाने के लिए यथासाध्य प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सहयोग देने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़नी चाहिए।

युगशक्ति गायत्री का विस्तार

युगऋषि ने गायत्री को युगशक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया है। उसका भी प्रत्यक्ष-परोक्ष प्रभाव सभी ओर दिखाई दे रहा है। प्रत्यक्ष रूप में गायत्री महामंत्र पर लगे बंधन तो समाप्त हुए ही हैं, विश्व के सभी भूखंडों में रहने वाले विभिन्न मत-मतांतरों के अनुयायियों द्वारा गायत्री महामंत्र का उपयोग निर्भयता और उत्साहपूर्वक करते हुए देखा जा रहा है। यह सब शुभ है, उत्साहवर्धक है, किंतु समय की माँग के अनुरूप पर्याप्त नहीं। इसके लिए दो प्रकार के अभियान समानांतर रूप से चलाये जाने की जरूरत है-

१. गायत्री महामंत्र को उपासना में शामिल करने-कराने का अभियान। गायत्री महामंत्र सबके लिए है, किसी भी इष्ट-गुरु या पंथ को मानने वाले इसका सार्थक उपयोग कर सकते हैं। जो इस विचार से सहमत हों, उन्हें गायत्री मंत्र को अपनी उपासना में शामिल करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

भारत में प्रचलित तमाम सम्प्रदायों के मूर्धन्यों एवं मान्य संतों ने अपने-अपने विभिन्न मंत्रों-नामों के जप के साथ गायत्री महामंत्र जप के प्रति सहमति प्रकट की है। इसमें सनातनी, आर्य समाजी, वैष्णव सम्प्रदाय, स्वामी नारायण, राधास्वामी जैसे तमाम मत शामिल हैं। सत्य साईं बाबा ने तो अपने प्रवचनों में कई जगह कहा है कि गायत्री महामंत्र का प्रयोग अब सभी को करना चाहिए।

अमेरिका तथा यूरोप सहित विश्व के अनेक देशों के व्यक्ति अब स्वयं को किसी सम्प्रदाय विशेष से जोड़ना नहीं चाहते। वे धर्म और ईश्वर सम्बंधी वैज्ञानिक दृष्टि ही अपनाना चाहते हैं। सभी गायत्री महामंत्र को निर्विवाद मानते हुए उसका प्रयोग करने के लिए सहमत और उत्साहित हो उठते हैं।

ऐसे समझदारों को बड़ी आसानी से समझाया जा सकता है कि गायत्री महामंत्र में परमात्मसत्ता के किसी भी नाम या रूप के लिए कोई आग्रह नहीं है। उसे किसी भी नाम-रूप के साथ प्रयुक्त किया जा सकता है। उसका मुख्य उद्देश्य परमात्मा को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को जीवन में धारण करना है।

२. नयी गायत्री :- युगऋषि ने कहा है कि आद्यशक्ति गायत्री को सद्भाव एवं सद्विचार के रूप में पहचानना और अपनाना सभी के लिए जरूरी है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि वेदोक्त पारंपरिक गायत्री मंत्र जप करने में किसी को संकोच हो तो उन्हें **'सबके लिए सद्बुद्धि, सबके लिए उज्ज्वल भविष्य'** के नाम से गायत्री मंत्र का भावार्थ अपनी भाषा में दुहराने के लिए कहा जा सकता है। उक्त भाव वे अपने किसी भी प्रिय मंत्र या नाम का जप करते रहकर भी युगशक्ति के प्रवाह का लाभ भली प्रकार उठा सकते हैं।

युगऋषि के जन्म शताब्दी वर्ष में आ रही गायत्री जयंती पर गायत्री महाविद्या के व्यापक विस्तार के लिए विवेक और साहसपूर्ण प्रयासों की जोरदार शुरुआत की जानी चाहिए। यों देखा जाय तो विश्व में प्रचलित विभिन्न धर्म-सम्प्रदायों के मूर्धन्यों ने गायत्री की भावधारा का समयानुकूल प्रयोग किया भी है।

गायत्री की भावधारा के विविध प्रयोग

वेद का सूक्त है **'एकं सद्विप्राः बहुधा वदन्ति'** अर्थात् एक ही परम सत्य का वर्णन विज्ञ पुरुषों ने विविध रूप में किया है। गायत्री महामंत्र की मुख्य भाव धारा की व्याख्या करें तो उसमें निम्न तथ्य उभरकर सामने आते हैं।

➢ परमात्मा नाम-रूप से परे सर्वव्यापी, सर्व हितैषी है।

➢ उसे उच्च आदर्शों के रूप में पहचानना और अपनाना संभव है।

➢उसके पावन प्रकाश को अपने अंत:करण में धारण किया जाय।

➢ उसके आदर्शों के अनुरूप जीवन को चलाने के लिए प्रार्थना, संकल्प एवं प्रयास किये जायें।

गायत्री महामंत्र में तो उक्त चारों भाव उसके चारों चरणों में क्रमश: स्पष्ट हैं। वैदिक काल के बाद विकसित मतों-सम्प्रदायों में भी उक्त तथ्यों का समयानुकूल समावेश मिलता है। उदाहरणार्थ कुछ नमूने देखें-

जैन मत :-वैदिक कर्मकाण्डों में प्रवेश कर गये विकारों को नकारते हुए जैन तीर्थंकरों ने जो सूत्र दिये, उनमें उक्त चारों भावों को स्पष्ट अनुभव किया जा सकता है। उन्होंने नमोकार मंत्रों में केवल दिव्य गुणों के प्रति नमन का भाव रखा है।

✦**अरिहन्तों** (जीवन के शत्रुरूप विकारों का हनन करने वालों) को नमन।

✦**सिद्धों** (जीवन के सिद्ध सूत्रों का जीवन में साक्षात्कार करने वालों) को नमन।

✦**उपाध्यायों** (उक्त दोनों तरह के प्रयोग करने के लिए प्रेरणा-प्रशिक्षण देने वालों) को नमन।

✦**सभी साधुपुरुषों** (उक्त दिशा में नैष्ठिक प्रयास करने वाले सभी सज्जनों) को नमन।

नमन का अर्थ उस दिशा में झुकना, उनके प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए उनके अनुगमन के लिए नैष्ठिक प्रयास करना होता है। उक्त नमन यदि सार्थक हो तो जीवन में गायत्री महाविद्या का प्रकाशित होना सुनिश्चित है।

बौद्ध मत :-वैदिक धारा के विकारों के शोधन के क्रम में ही बोधिसत्वों के प्रयास हुए। उनके मान्य सूत्रों में भी गायत्री की भावधारा प्रत्यक्ष अनुभव की जा सकती है।

पहला सूत्र :- 'बुद्ध' की 'शरण' विवेक की, दिव्य अनुभूतियों की शरण लेने, उनका अनुगमन करने का संकल्प है।

दूसरा सूत्र :- 'धर्म की'-जीवन की आदर्श मर्यादाओं की शरण में जाने, अर्थात् उन्हें जीवन में सर्वोच्च स्थान देने का संकल्प व्यक्त करता है।

तीसरा सूत्र :- 'संघ की', अर्थात् व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठकर सामूहिक हितों के अनुशासनों की शरण में जाने, उन्हें अपनाने का संकल्प व्यक्त करता है।

स्पष्ट है कि उक्त संकल्पों के अनुसार जीवन जीने वालों के लिए दिव्य अनुदानों की धाराएँ सहज ही उपलब्ध रहेंगी।

ईसाई मत :- महात्मा ईसा ने भी ईश्वर को सर्वव्यापी, सर्वज्ञ एवं सर्वसमर्थ (ओम्नीप्रेजैण्ट, ओम्नीशियेण्ट तथा ओम्नीपोटेण्ट) कहा है। उसके दिव्य प्रकाश (डिवाइन लाइट) को जीवन में धारण करने का निर्देश दिया है, उसके हितकारी मार्ग (राइटियस पाथ) पर आगे बढ़ाने की प्रार्थना करने को कहा है।

इस्लाम मत :- इस्लाम में **'सूरह फातेहा'** को गायत्री महामंत्र जैसा ही दर्जा दिया गया है। उसके पाठ के बिना इस्लाम की कोई भी धार्मिक रस्म पूरी नहीं होती। उसका भाव इस प्रकार है :-

➢ शुरू करो अल्लाह का नाम लेकर जो कि परम कृपालु और परम दयालु (रहमान-रहीम) है।

➢ सारी स्तुतियाँ उसी के निमित्त हैं।

➢ वही दीन और अन्तिम समय का निर्णायक-मालिक है।

➢ हम उसी से उम्मीद रखें और उसी की शरण में जायें।

➢ वह हमें सीधे रास्ते से जीवन लक्ष्य की ओर ले चलें। ऐसे रास्तों से, जिन पर चलने वालों पर उसकी कृपा बरसती है, न कि ऐसे रास्ते से जिस पर चलने वालों पर उसका कोप बरसता है।

उक्त सभी उदाहरणों से स्पष्ट है कि जिन्हें भी सत्य का साक्षात्कार हुआ है, उन्होंने जीवन में गायत्री महाविद्या के भाव-प्रवाह को किसी न किसी रूप में शामिल अवश्य किया है। समय आ गया है कि कर्मकाण्डों और शब्दों से ऊपर उठकर उसी दिव्य धारा को जीवन में संचारित होने दिया जाय। इसके लिए सभी को प्रेरित-प्रोत्साहित-प्रशिक्षित किया जाय।

अभियान यों चलें

युगशक्ति के अवतरण पर्व-गायत्री जयंती के क्रम में गायत्री विद्या के विस्तार के अभियान को गति देने के लिए व्यक्तिगत एवं सामूहिक स्तर पर इस प्रकार प्रयास चालू करें :-

✦ युग परिवर्तन का महत्त्वपूर्ण समय आ गया है। प्रज्ञायुग का अवतरण होना है।

✦ सतयुग फिर आयेगा कब?

जन-जन जब चाहेगा तब।

✦ कहावत है 'जहाँ चाह हैं, वहाँ राह है।' अर्थात् जिनकी चाह सच्ची है, वे अपने उद्देश्य के लिए कठिनाइयों में भी राह बना लेते हैं।

✦ सच्ची चाह पैदा करके ईश्वरीय योजना में भागीदार बनें।

✦ उज्ज्वल भविष्य के लिए राह बनाने के लिए तीनों प्रकार के प्रयास हर व्यक्ति, हर संगठन अपने-अपने ढंग से करें।

(क) भावनात्मक प्रयास :-अपनी भाषा में परमात्मा से 'सबके लिए सद्बुद्धि तथा सबके लिए उज्ज्वल भविष्य' की प्रार्थना नियम से करें। उसे अधिक प्राणवान बनाने के लिए गायत्री महामंत्र अथवा अन्य इष्टमंत्र का जप भावनापूर्वक करें।

(ख) विचारात्मक :- विश्वास करें कि बुरे विचारों ने बुराई पैदा की है, अच्छे विचार अच्छी परिस्थितियाँ पैदा करने में सक्षम हैं। सद्विचारों को धारण करने और उन्हें प्रभाव क्षेत्र में फैलाने के लिए नियमित प्रयास करें।

(ग) संयम साधना द्वारा अपनी शक्तियों को बिखरने से रोकें, उन्हें व्यसनों-कुरीतियों से बचाकर सृजन की सत्प्रवृत्तियों में लगाने के लिए छोटे-छोटे संकल्प और प्रयास अपनी परिस्थितियों के अनुसार करते रहें।

समाज के विभिन्न वर्गों-संगठनों के विचारशीलों से मिलकर उन्हें उक्त सूत्रों के लिए सहमत करें। उन्हीं के श्रद्धा-प्रतीकों को स्थापित कराकर उनके सामने सामूहिक प्रार्थना के प्रयोग कराये जायें। उक्त तीनों पुरुषार्थों को नियमित रूप से चलाने के लिए प्रेरित किया जाय।

पर्व समारोह

इस बार गायत्री जयंती पर्व के समारोह वसंत पर्व की तरह तीन दिन के होंगे। उन्हें यथाशक्ति अधिक से अधिक विकेन्द्रित और सुनियोजित रूप दिया जाय।

⇨ गायत्री जयंती ११ जून, शनिवार को है। पूर्व संध्या १० जून, शुक्रवार की शाम से अखण्ड जप प्रारम्भ किया जायेगा, जो ११ जून को शाम तक चलेगा।

⇨ ११ तारीख को प्रात: हर वर्ष की तरह पर्वपूजन सहित स्थानीय परिस्थिति के अनुसार एक से नौ कुण्डीय यज्ञ सम्पन्न होंगे।

⇨ ११ की शाम को अखण्ड जप की समाप्ति के साथ ऊपर वर्णित तीनों तरह के पुरुषार्थों को गति देने के संकल्प किए-कराये जायेंगे।

⇨ १२ तारीख (रविवार) को प्रात: सामूहिक ध्यान गुरुदेव के ध्यान कैसेट/सीडी से कराया जाय।

छ: तरह के ध्यान उपलब्ध हैं। उनमें से अमृतवर्षा अथवा त्रिवेणी संगम में से ही कोई ध्यान कराया जाय। ध्यान के बाद अपने ही क्षेत्र में प्रभातफेरी की जाय, जिसमें उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना के लिए जन-जन को प्रेरित-आमंत्रित किया जाय।

⇨ १२ तारीख की शाम को संगीत संध्या के माध्यम से जनसामान्य या प्रबुद्धजनों तक युगशक्ति के विस्तार के लिए प्रेरणाएँ भरी जायें।

युग प्रवाह के अनुरूप ऋषि चेतना अपना कार्य कर रही है। जाग्रत् चेतना सम्पन्नों के मनों में उसके अनुरूप भाव उभर रहे हैं। परिजन उन्हें थोड़ा भावनात्मक सहयोग देंगे तो वे सहज ही सक्रिय हो उठेंगे।

आलस्य से बढ़कर अधिक घातक और समीपवर्ती शत्रु दूसरा नहीं।

सार-संक्षेप में

भ्रष्टाचार के विरोध में रैली और ज्ञापन

जयंत, सिंगरौली (मध्य प्रदेश)

चेतना केन्द्र, दुधीचुआ ने शांतिकुंज के आवाहन पर भ्रष्टाचार के विरोध में सशक्त आन्दोलन चलाया। श्री नरेश पाण्डेय के अनुसार उनकी शाखा ने भ्रष्टाचारियों एवं काला बाजारियों की क्रूर कारगुजारियों से त्रस्त होकर श्री अन्ना हजारे द्वारा चलाये जा रहे अभियान को अपना पूर्ण समर्थन दिया। उनकी शाखा ने २४००० लोगों के हस्ताक्षरयुक्त एक ज्ञापन माननीय जिलाधीश सिंगरौली के माध्यम से माननीय प्रधानमंत्री जी एवं महामहिम राष्ट्रपति जी को भेजा। इस संदर्भ में रैली निकाली गयी। 'मालिकों को जगाओ-प्रजातंत्र बचाओ' नारों से पूरा जिला मुख्यालय गूँज उठा। सभी कार्यकर्त्ताओं ने अभियान के समर्थन में एक दिन का उपवास भी रखा। युग निर्माण आन्दोलन से जुड़े सर्वश्री हंसलाल वैश्य, अरविंद श्रीवास्तव, जगन्नाथ द्विवेदी, गणेश सिंह, हरिपाल सिंह, राजाराम वैश्य, केदारनाथ सिंह एवं महिला मण्डल की बहिनों का विशेष सहयोग रहा।

नवरात्रि से पूर्व ताप्ती शुद्धिकरण अभियान

बुरहानपुर (मध्य प्रदेश)

नवरात्रि साधना पर्व से पूर्व ३ अप्रैल को बुरहानपुर के राष्ट्रीय पत्र लेखन परिषद के कार्यकर्त्ताओं और श्रीराम गुरुकुल विद्यालय के विद्यार्थियों ने मिलकर बुरहानपुर के राजघाट पर सफाई अभियान चलाया। इस अभियान में २ ट्रॉली कचरा निकाला गया। श्रमदान में जुटे सैकड़ों कार्यकर्त्ताओं ने पुराने कपड़े, विसर्जित फूलहार, मूर्तियाँ, पॉलीथीन आदि नदी तट और घाटों से हटाकर उन्हें साफ सुथरा बनाया।

श्री गणेश बोरसे ने तीन उपक्रम- जल शुद्धि, तट शुद्धि और आदर्श तटीय ग्राम के अंतर्गत चलाये जा रहे अभियान की जानकारी लोगों को दी। उन्होंने बताया कि नदी में ज्यादातर प्रदूषण घाटों पर निर्माल्य के सीधे विसर्जन से होता है। इसके लिए वैकल्पिक व्यवस्था बनाते हुए निर्माल्य विसर्जन के कुण्ड बनाने का अनुरोध उन्होंने नगर महापौर से किया है।

निर्मल, स्वावलम्बी ग्रामतीर्थ कोड़िया

कोड़िया, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

प्रज्ञापीठ कोड़िया पर रामनवमी के पावन अवसर पर निःशुल्क आयुर्वेदिक स्वास्थ्य परीक्षण एवं औषधि वितरण शिविर का आयोजन किया। इस शिविर का उद्‌घाटन श्री हेमचंद्र यादव-उच्च शिक्षा तकनीकी एवं कैबिनेट मंत्री छत्तीसगढ़ शासन ने किया। उन्होंने गायत्री परिवार की ओर से कोड़िया ग्राम को निर्मल, स्वावलम्बी आदर्श ग्रामतीर्थ के रूप में विकसित करने के लिए किये जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए शासकीय सहयोग की पहल भी की। शासन की ओर से प्रज्ञापीठ पर स्वावलम्बन प्रशिक्षण के लिए ५० फीट लम्बा, ५० फीट चौड़ा हॉल बनाने के लिए भूमिपूजन भी उन्होंने किया। उल्लेखनीय है कि गाँव के छः स्वयं सहायता बचत समूह अगरबत्ती, हवन सामग्री, कैंचुआ खाद, नेडप खाद, कामधेनु फसल रक्षक, कपड़े सिलाई आदि के लघु उद्योग चला रहे हैं। प्रज्ञापीठ की श्रीराम वाटिका पर स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत मूल्यवान वनस्पतियाँ भी लगायी गयीं हैं।

स्वावलम्बन प्रशिक्षण शिविर

खपरैल, दार्जिलिंग (प.बंगाल)

खपरैल के नये रचनात्मक एवं स्वावलम्बन केन्द्र का निर्माण किया गया है। १ से ५ मार्च की तारीखों में इस केन्द्र पर प्रथम स्वावलम्बन प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। श्री जयशंकर सिंह, श्री दीपक अधिकारी और श्री शेर बहादुर एरी ने इस शिविर में गोमय दंत मंजन, दर्द नाशक गोमय तेल, गोमय आँख का तेल, अमृतधारा, अगरबत्ती, यज्ञोपवीत आदि बनाने का प्रशिक्षण दिया। इस प्रशिक्षण शिविर को युवाशक्ति में युग निर्माणी आस्था जाग्रत् करने में भी अच्छी सफलता मिली।

आदर्श विवाह समारोह- छा गये उर्दू सत्संकल्प

बड़वानी (मध्य प्रदेश)

मुख्यमंत्री कन्यादान योजना के अंतर्गत बड़वानी में आयोजित सामूहिक विवाह समारोह में ४१ हिंदू और १० मुस्लिम जोड़ों का विवाह एक ही पांडाल में सम्पन्न हुआ। हिंदू जोड़ों का विवाह गायत्री परिवार द्वारा समयोचित आदर्श परंपराओं के साथ कराया गया। मुख्य अतिथि आदिवासी विकास अध्यक्ष श्रीमती रैलम चौहान ने समारोह में उमड़ी सद्‌भावना को देखकर कहा कि यहाँ पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी का 'मानव मात्र एक समान' का नारा चरितार्थ होता दिखाई दे रहा है।

उर्दू सत्संकल्पों का प्रभाव

उन्होंने १८ सत्संकल्पों का उर्दू में पाठ करते हुए मुस्लिम समुदाय से भी इन सूत्रों को जीवन में अपनाने का आग्रह किया। मुस्लिम समाज के जिला सदर डॉ. अब्दुल रशीद पटेल, अफजल खान, इनायत मंसूरी, हाजी शेख ने नवयुग के संविधान की सराहना करते हुए आचार्य श्रीराम शर्माजी के इन विचारों को अपनाने की प्रेरणा समाज को दी। उन्होंने कहा कि गायत्री परिवार सर्वधर्म सद्‌भाव की जो बात कहता है, उसे करता भी है।

गायत्री जयंती के कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण

टीवी चैनल 'संस्कार', 'प्रज्ञा' और 'दिशा' द्वारा शांतिकुंज में होने वाले गायत्री जयंती के कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण किया जायेगा।

प्रसारण समय दिनांक १० जून : सायं ६.३० से ९.०० बजे तक।
तथा ११ जून : प्रातः ७.०० से ९.३० बजे तक।

पर्यावरण जनजागरण पदयात्रा

गाँव-गाँव दिया हरित क्रांति का संदेश

बुरहानपुर (मध्य प्रदेश) - ८ मई को बुरहानपुर शाखा ने ग्राम बसाली से वृक्षगंगा पर्यावरण जन जागरण पदयात्रा निकालते हुए ४ गाँवों में १२०० पौधों के रोपण के संकल्प कराये। यह यात्रा साईंखेड़ा, नांदुरा, नागझिरी गाँवों से गुजरती हुई १३ किमी. का मार्ग तय कर पुनः बसाली गाँव पहुँची, जहाँ पर्यावरण दीपयज्ञ के माध्यम से पदयात्रा का समापन हुआ। इस अवसर पर उपस्थित ग्रामीणों ने अपने-अपने आँगन या खेत में दो-तीन पौधे रोपकर उनके पालन का संकल्प लिया।

'वृक्षारोपण युग अभियान-एक वृक्ष दस पुत्र समान' और 'प्रजनन रोको वृक्ष लगाओ-हराभरा निज देश बनाओ' जैसे नारों से गाँव गूँज उठे। पदयात्रा में पर्यावरण ज्ञानरथ, गौमाता के साथ पीपल, बड़ एवं नीम के पौधे सिर पर धारण कर

महिलाएँ बड़ी संख्या में चल रही थीं।

पदयात्रा प्रत्येक गाँव में दो घंटे रुकी। इस अवसर पर पर्यावरण संरक्षण के सूत्र वाक्य दीवारों पर लिखे गये। २००० स्टिकर घर-घर लगाये गये। चौपालों पर ग्राम सभाएँ आयोजित हुईं, जहाँ लोगों को वृक्षों के लाभों की जानकारी दी गयी।

साईंखेड़ा गाँव के लोगों ने देव स्थान मुंजोबा के मंदिर पर 'मुंजोबा की पंचवटी' बनाने का संकल्प लिया, जिसमें ५०० पौधों का रोपण किया जायेगा। गाँव-गाँव पर्यावरण वाहिनियाँ गठित की गयीं। समग्र अभियान में कुल १२०० पौधों के संकल्प पत्र भरे गये। बुरहानपुर शाखा ने अगले दिनों देडतलाई, नेपानगर, धुलकोट आदि स्थानों पर भी इसी प्रकार की वृक्षगंगा पदयात्राएँ निकालने का मन बनाया है।

पशुबलि के खिलाफ बदल रहा है जनमानस

काशीपुर, नैनीताल (उत्त.)

११ से १७ अप्रैल की तारीखों में काशीपुर में चैती मेला आयोजित हुआ। स्थानीय गायत्री परिवार ने इस मेले में परम पूज्य गुरुदेव की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में वहाँ एक विशाल साहित्य स्टॉल और प्रदर्शनी लगायी थी। उल्लेखनीय है कि गायत्री परिवार के परिजन वहाँ कई वर्षों से जन-जन तक सुविचारों को पहुँचाने का कार्य कर रहा है, जिसके इस वर्ष सत्परिणाम भी दिखाई दिये।

काशीपुर के पौराणिक बालासुंदरी मंदिर में पशुबलि की घृणित परंपरा चली आ रही थी। गायत्री परिवार इसे बंद कराने के लिए कई वर्षों से प्रयास कर रहा है। उल्लेखनीय है कि गत वर्ष मंदिर पर जहाँ २०० बकरों की बलि दी गयी थीं, वहीं इस वर्ष बलि पर पूर्ण प्रतिबंध रहा।

प्रशासन द्वारा बलि प्रथा को सर्वोच्च न्यायालय के आदेशानुसार प्रतिबंधित किया था। गायत्री परिवार के निरंतर प्रयासों का ही परिणाम था लोगों ने इस निर्णय का सम्मान करते हुए परंपरा को बदलने की पहल की। इस वर्ष लोग अपनी मान्यता के अनुरूप मंदिर तक बकरे लाये तो, लेकिन बलि की यथार्थता को समझते हुए केवल पूजा-पाठ कर उन्हें वापस ले गये। नगरवासियों का मानना है कि गायत्री परिवार के विचार क्रांति अभियान का ही परिणाम है कि बलि प्रथा के समर्थन में किसी ने भी किसी प्रकार का विरोध नहीं किया।

मिल रहा है उद्देश्यपूर्ण जीवन का विलक्षण आनंद

१४ वर्षों से कर रहे हैं पेड़-पौधे और पक्षियों की जीवन रक्षा

मुलताई, बैतूल (मध्य प्रदेश)

वर्ष १९९६ में आम शिक्षकों की भाँति श्री गेंदालाल बारंगे भी सेवा निवृत्त हो गये। भावी जीवन की अनेक राहें थीं। धनोपार्जन के नये तरीके ढूँढना, नाते-पोतों के बीच जीवन बिताना आदि पारंपरिक विकल्पों की बजाय उन्होंने अपने बचपन के सेवा के संस्कार को पोषित करने का निर्णय लिया। ७५ वर्ष की आयु में वे आज ऐसा आनंदित जीवन जी रहे हैं, जिससे हजारों प्राणी सुख पाते हैं। उनका जीवन मानवता को जीवन की सही राह दिखाता है।

शिक्षक पद से सेवा निवृत्ति के बाद से ही वे प्रतिदिन अपनी साइकिल पर ७०-७५ लीटर पानी लेकर चल पड़ते हैं। उसमें से ३० लीटर पानी से अपने द्वारा लगाये गये पौधों की सिंचाई करते हैं। २० लीटर पानी पशु-पक्षियों की प्यास बुझाने के लिए प्लास्टिक के डिब्बे या मिट्टी के कटोरों में डाल देते हैं। उनके पानी डालते ही पक्षियों का कलरव आरंभ हो जाता है, जो उन्हें अनिर्वचनीय आनंद की अनुभूति कराता है। गर्मी के दिनों में जब नदी-नाले सूख जाते हैं, तब पेड़ पर बँधे इन बर्तनों से जल पाकर पक्षी अपनी प्यास बुझाते हैं। ये पक्षी जैसे श्री बारंगे जी के मित्र ही बन गये हैं।

श्री गेंदालाल जी ने अपने छोटे से प्रयासों से जल संरक्षण की दिशा में भी लोगों को राह दिखाई है। उन्होंने मुलताई-आठनेर मार्ग के दोनों किनारों पर ४ खंती (गड्ढे) खुदवाये हैं, ताकि इनमें वर्षाकाल का जल संरक्षित हो सके। श्री बारंगे जी का कहना है कि यदि हर व्यक्ति एक पौधा लगाने और वर्षा जल को सहेजने का बीड़ा उठाये तो पर्यावरण संरक्षण के लिए चलाई जा रही तमाम योजनाओं की कमी ही नहीं रहेगी। वे १९ वर्ष की आयु से ही समाज सेवा के क्षेत्र में सक्रिय हैं।

श्री बारंगे जी द्वारा पेड़ों पर लटकाये गये जलपात्र

पतन-निराशा के घोर अंधकार में आशा के दीप जला रहे हैं युगऋषि के सुविचार

आचार्य जी के विचारों को पढ़कर युवा पीढ़ी निर्धारित करे अपना जीवन लक्ष्य- शिक्षा मंत्री

बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश

२४ से ३० अप्रैल की तारीखों में बिलासपुर में एक विशाल पुस्तक मेले का आयोजन हुआ। इसका शुभारंभ माननीय शिक्षा मंत्री- श्री आई.डी. धीमान, भाषा एवं संस्कृति विभाग के निदेशक- डॉ. प्रेम शर्मा, जिलाधीश-श्री रितेश चौहान की विशेष उपस्थिति में हुआ। इस अवसर पर शिक्षा मंत्री ने कहा कि जिस लक्ष्य को लेकर गायत्री परिवार पूरे विश्व में गायत्री और यज्ञ की लौ जगा रहा है, वह सराहनीय है। वेदमूर्ति पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने जो इतिहास की संरचना की है, वह अद्वितीय है। आज की युवा पीढ़ी को उनके साहित्य को पढ़कर अपना लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। उन्होंने विद्यालयों में युग साहित्य की स्थापना पर विशेष बल देते हुए कहा कि इससे देश की भावी पीढ़ी अपनी संस्कृति को अपनाने और उसे सँवारने के लिए प्रेरित होगी।

युगसाहित्य का अवलोकन करते डॉ. प्रेमप्रकाश एवं जिलाधीश श्री रितेश चौहान

डॉ. प्रेम शर्मा ने कहा कि भारतीय संस्कृति की रक्षा में गायत्री परिवार का महत्त्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने पुस्तक मेले की अच्छी से अच्छी सफलता की कामना के साथ पन्द्रह हजार रुपये का आर्थिक सहयोग करने की घोषणा की। श्री रितेश चौहान ने कहा कि युगव्यास पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा लिखा साहित्य युवा पीढ़ी का सही मार्गदर्शन करने वाला है। पर्यावरण संरक्षण की किताब को उन्होंने खूब सराहा।

पुस्तक मेले में विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों के शिक्षकों और विद्यार्थियों का विशेष उत्साह दिखाई दिया। केन्द्रीय विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार श्री के.डी. लखनपाल-आईएएस ने परिजनों से मिशन की गतिविधियों पर विस्तार से चर्चा की।

पुस्तक मेले का समापन दीपयज्ञ के साथ हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्री सुशील कुकरेजा-जिला एवं सत्र न्यायाधीश ने की, श्री राजेश धर्माजी सपप्नीक मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर गायत्री परिवार की वरिष्ठ महिला कार्यकर्त्ताओं को विशेष रूप से सम्मानित किया गया, जिन्होंने पुस्तक मेले की सफलता में असाधारण योगदान देते हुए पूज्य गुरुदेव के विचारों को जन-जन तक पहुँचाया।

कथा के संग मिली शानदार सफलता

हिसार (हरियाणा)

दिनांक १६ से २४ अप्रैल की तारीखों में हिसार के टाउन पार्क, पीएलए मार्केट पार्किंग में पावन प्रज्ञा पुराण कथा और गायत्री महायज्ञ के साथ राज्य स्तरीय पुस्तक मेले का आयोजन हुआ। नगर विधायक श्रीमती सावित्री जिंदल ने पुस्तक मेले का उद्घाटन किया। श्री दीपक नंदी-सचिव नगर विकास न्यास भिवाड़ी, जिला अलवर (राजस्थान) ने परम पूज्य गुरुदेव के जन्म शताब्दी वर्ष में उन्हें भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए इस पुस्तक मेले में ब्रह्मभोज योजना के अंतर्गत साहित्य उपलब्ध कराया था। कुल पाँच लाख रुपये का साहित्य बिका। हिसार उपजोन का अब तक का यह सबसे बड़ा पुस्तक मेला था, जिसमें गुरुसत्ता के आशीर्वाद से शानदार सफलता मिली।

कार्यक्रम का शुभारंभ आकर्षक कलश यात्रा से हुआ, जिसमें ३५० से अधिक बहिनों ने भाग लिया। कार्यक्रम संचालन के लिए शांतिकुंज से श्री शशिकांत जी की टोली पहुँची थी। समापन की पूर्व संध्या पर आयोजित दीपयज्ञ में अपार जन उल्लास दिखाई दिया। हजारों प्रज्वलित दीपों की साक्षी में लोगों ने पूरे जोश और उत्साह के साथ 'हम बदलेंगे-युग बदलेगा' के नारे लगाये। इन्हें चरितार्थ करने के लिए सैकड़ों लोगों ने नवसृजन आन्दोलन में नैष्ठिक भागीदारी के संकल्प लिये।

विधायक श्रीमती जिंदल कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन करते हुए

समापन समारोह में मिशन की अथक सेवा करने वाले वरिष्ठ नागरिकों का विशेष रूप से सम्मान किया गया। इस क्रम में मुख्य अतिथि श्री चेतराम रहबर, दर्शन लाल शर्मा, सुदर्शन बंसल एवं डॉ. राजकुमार गर्ग को प्रशस्ति पत्र प्रदान करते हुए सम्मानित किया गया।

डीजल रेल कारखाना में

वाराणसी, उत्तर प्रदेश

१७ से २१ अप्रैल की तिथियों में डीजल रेल इंजन कारखाना, वाराणसी स्थित योग साधना केन्द्र में गायत्री परिवार द्वारा पुस्तक मेले का आयोजन किया गया। श्री ए.के. मित्तल-भण्डार नियंत्रक डी.रे.का. ने दीप प्रज्वलन कर इसका उद्घाटन किया। उन्होंने आचार्य जी के साहित्य को हर व्यक्ति की पहुँच वाला और हर मनुष्य में देवत्व का जागरण करने वाला बताया। वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी श्री वीरेन्द्र कुमार ने कहा कि आचार्य जी के विचार घर को स्वर्ग बनाने वाले हैं। स्वर्ग पैसे से नहीं, ऋषि-मनीषियों के सुविचारों को अपनाने से मिलता है। सहायक सुरक्षा आयुक्त श्री एसबी गोस्वामी ने युग साहित्य को कर्मचारियों का चरित्र और मनोबल बढ़ाने वाला बताते हुए गायत्री परिवार के डी.रे.का. में होने वाले कार्यक्रमों में सदैव सहयोग करने का वचन दिया।

इस मेले से डी.रे.का. के अधिकारी-कर्मचारियों में जबरदस्त उत्साह देखा गया। प्रचुर मात्रा में साहित्य लोगों ने खरीदा। संयोजक डॉ. माताप्रसाद पाण्डेय, व्यवस्थापक श्री नगीना प्रसाद यादव आदि की सराहनीय भूमिका रही।

कनाडा में लगा प्रथम पुस्तक मेला

गुल्फ (कनाडा)

गायत्री परिवार वेस्टर्न ओंटारियो ने गुल्फ शहर में १५ से १७ अप्रैल तक पहली बार पूज्य गुरुदेव के साहित्य पर आधारित पुस्तक मेले का आयोजन किया। इसमें मिशन की चुनी हुई २०० पुस्तकें प्रदर्शित की गयी थीं। इस मेले में स्थानीय लोगों को ध्यान में रखते हुए अधिकांश पुस्तकें अंग्रेजी भाषा में ही प्रदर्शित की गयी थीं, जिनमें वेद-उपनिषद् भी शामिल थे। भारतीयों के लिए हिंदी और गुजराती भाषी कुछ पुस्तकें भी रखी गयी थीं।

कनाडा के पुस्तक मेले में प्रदर्शित युग साहित्य

श्री अतुल गुप्ता के अनुसार परिजनों की आशा के अनुरूप कनाडा के नागरिकों ने युग साहित्य में अच्छा उत्साह दर्शाया। गायत्री परिवार के परिजन उन्हें पुस्तकों की विशेषता बताने और पूज्य गुरुदेव एवं उनके मिशन का परिचय देने के लिए सदैव तत्पर रहे।

इससे पूर्व १३ अगस्त को शाखा परिजनों ने गायत्री यज्ञ का आयोजन करते हुए शताब्दी मंत्र लेखन साधना एवं नवरात्रि साधना अनुष्ठान की पूर्णाहुति की।

१२००० प्रबुद्धों तक पहुँचाया ऋषिचिंतन

आगरा (उत्तर प्रदेश) - जिला समन्वय समिति आगरा ने परम पूज्य गुरुदेव की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में 'युग निर्माण योजना' पत्रिका के फरवरी अंक की कुल १२००० प्रतियाँ नगर के प्रबुद्ध जनों में वितरित कीं। दीवानी अदालत (सिविल कोर्ट), वाणिज्य कर कार्यालय, आगरा विकास प्राधिकरण, नगर निगम कार्यालय, जल निगम कार्यालय, सीडीओ कार्यालय, जीवन बीमा निगम, बीएसएनएल कार्यालय, डीआरएम कार्यालय और ग्रामीण क्षेत्र के प्रबुद्ध जनों तक पूज्य गुरुदेव के जीवन और मिशन का परिचय देने वाले ये अंक पहुँचाये गये। श्री उमेशचंद्र कुलश्रेष्ठ के अनुसार इन विभागों से संपर्क रखने वाले नैष्ठिक कार्यकर्त्ताओं ने अपने दायित्व भरपूर उल्लास और श्रद्धा के साथ निभाये, जिसके परिणाम स्वरूप जन्म शताब्दी वर्ष के आयोजनों में जन-जन की भागीदारी बढ़ रही है। नगर में शताब्दी मंत्र लेखन अभियान में भी हजारों लोगों ने भागीदारी की।

इंदौर उपजोन में मेलों की शृंखला

इंदौर (मध्य प्रदेश)

पूज्य गुरुदेव की जन्मशताब्दी में उनके विचारों के व्यापक विस्तार के लिए इंदौर उपजोन के अनेक स्थानों पर शृंखलाबद्ध तीन दिवसीय पुस्तक मेलों का आयोजन किया जा रहा है। इनके साथ प्रबुद्ध वर्ग संगोष्ठी, महिला सम्मेलन आदि का भी आयोजन होता है। अब तक १ से ३ मार्च को गायत्री शक्तिपीठ गौतमपुरा, ९ से ११ मार्च को मार्केटिंग परिसर सावेर, १३ से १५ मार्च को देपालपुर इंदौर, २६ से २८ मार्च को पीथमपुर, ५ से ७ अप्रैल को पंधाना में ऐसे पुस्तक मेले शानदार सफलता के साथ सम्पन्न हुए। ग्रामीण क्षेत्र होने के बावजूद करीब डेढ़ लाख रुपये मूल्य का साहित्य लोगों ने अपने घरों में प्रतिष्ठित किया। इसमें युवा वर्ग की विशेष अभिरुचि थी। उन्हें समय की माँग के अनुरूप दिशा दी गयी।

श्रीमती लक्ष्मी ओमप्रकाश जाधव, श्री किशोर पाटीदार, पीयूष शर्मा, प्रभु पटेल, महेश पटेल आदि की सक्रिय भूमिका से ये पुस्तक मेले आयोजित किये गये।

यज्ञ में दिव्यभाव के दर्शन हुए

रत्नागिरी (महाराष्ट्र) - हनुमान जयंती के पावन अवसर पर रत्नागिरी जिले के देवरुखा गाँव में पाँच कुण्डीय गायत्री यज्ञ का आयोजन हुआ। गायत्री परिवार पुणे के कार्यकर्त्ता श्री विजय धारवाडकर यज्ञ का संचालन कर रहे थे। वहीं एक कुण्ड पर यज्ञ कर रहीं श्रीमती नलिनी महाजनी ने देखा कि उनके कुंड में अग्नि की लपटों में ओम की बड़ी स्पष्ट आकृति उभरी है। इसे वीडियो रिकॉर्डिंग में भी देखा जा सकता है।

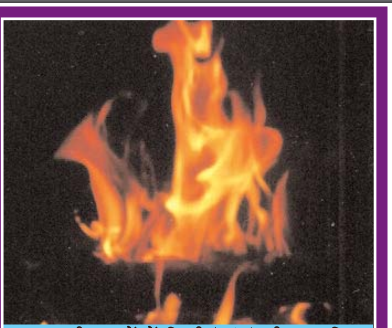
यज्ञ की लपटों में दिखी 'ॐ' की आकृति

दिवंगत देवात्मा को श्रद्धांजलि

मालाड, मुम्बई (महाराष्ट्र) - मुम्बई के ९३ वर्षीय युग निर्माणी परिजन श्री कृष्ण गोपाल टावरी का २७ फरवरी को निधन हो गया। वे परम पूज्यवर के दक्षिण अफ्रीका प्रवास के समय उनके साथ थे। श्री टावरी जी ने १९५३ में पूज्य गुरुदेव से दीक्षा ली थी और ५८ के यज्ञ में महत्त्वपूर्ण सक्रियता अपनाई। तत्पश्चात् वे मिशन की पत्रिकाओं और अन्य साहित्य को जन-जन में पहुँचाने के कार्य में आजीवन जुटे रहे। वे वयोवृद्ध हो जाने पर भी २०० अखण्ड ज्योति-युगनिर्माण योजना पत्रिकाएँ वितरित करते थे। अपने बच्चों को भी उन्होंने मिशन के अनुरूप संस्कार और प्रेरणाएँ प्रदान की हैं। शांतिकुंज एवं समस्त गायत्री परिवार स्व. श्री टावरी जी की आत्मा की शांति-सद्गति की प्रार्थना परम पूज्य गुरुदेव-वं.माताजी की सूक्ष्म सत्ता से करता है।

दुनिया में कोई ऐसा देव नहीं है जो धूप-दीप, पूजा-पाठ से प्रसन्न होकर पुरुषार्थ विहीन भक्त की झोली भरता रहे।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के प्रांतीय पुरस्कार वितरण समारोह

जन्मशताब्दी वर्ष में संख्या होगी दो गुनी

भोपाल (मध्य प्रदेश)

मध्य प्रदेश प्रांत २०११ में आयोजित हो रही भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के लिए कमर कस चुका है। २ अप्रैल को गायत्री शक्तिपीठ भोपाल में तथा ३ अप्रैल को गायत्री शक्तिपीठ जबलपुर में इस संदर्भ में प्रांतीय गोष्ठियों का अयोजन हुआ। शांतिकुंज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री केशरी कपिल जी और भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा प्रकोष्ठ के प्रतिनिधि डॉ. पीडी गुप्ता, श्री आरके आमेटा एवं श्री रवि शर्मा इन गोष्ठियों में उपस्थित थे। इन्हीं गोष्ठियों के साथ भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के प्रांतीय पुरस्कार वितरण समारोह भी आयोजित हुए।

भोपाल की गोष्ठी के मुख्य अतिथि श्री आरडी मालवीय-उप संचालक शिक्षा थे। श्री एसके पाण्डे-जोनल प्रभारी, डॉ. शंकर पाटीदार-प्रांतीय संयोजक एवं श्री एसआर चौधरी-प्रांतीय समन्वयक विशेष रूप से उपस्थित थे।

सर्व प्रथम वर्ष २०११ के लिए शांतिकुंज द्वारा की जा रही तैयारियों की विस्तृत जानकारी दी गयी। जिला संयोजकों से विचार-विमर्श कर आगामी १७ सितम्बर २०११ को मध्य प्रदेश में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा आयोजित कराने पर सहमति बनी।

इंदौर (४२०००), धार (३७०००) और छिंदवाड़ा (३४०००) जिलों को वर्ष २०१० में क्रमश: सर्वाधिक छात्र संख्या बिठाने के लिए सम्मानित किया गया।

इस वर्ष परम पूज्य गुरुदेव की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में परिजनों में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में शामिल होने वाले विद्यार्थियों की संख्या लगभग दूनी करने का जबरदस्त उत्साह है। भोपाल की बैठक में खरगोन जिले से आये भाइयों ने बड़वानी में और सुश्री कमला डेहरिया ने छिंदवाड़ा जिले में ५१०००-५१००० विद्यार्थी शामिल करने की घोषणा की। उन्हें इसके लिए विशेष शील्ड प्रदान करते हुए सम्मानित किया गया। जबलपुर की गोष्ठी में सिवनी और जबलपुर जिलों ने ५१००० विद्यार्थी शामिल करने के संकल्प लिये। अन्य जिलों ने भी इसी तरह अपनी छात्र संख्या बढ़ाने की घोषणाएँ कीं।

प्रांतीय पुरस्कार वितरण के क्रम में ४३ विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। समारोह में इंदौर के श्री खण्डेलवाल, श्री पंवार और श्री आचार्य जी की विशेष उपस्थिति रही। धार से श्री रमेश सचान, श्री कमल पाण्डे; उज्जैन से श्री प्रह्लाद सिंह वोराना, देवास से श्री गणेश व्यास, बड़वानी से श्री महेन्द्र भावसार, छतरपुर से श्री शर्मा, सतना से श्री लक्ष्मण प्रसाद यादव, सीहोर से श्री वीपी मल्होत्रा, शुजालपुर मण्डी से श्री बापूलाल विश्वकर्मा आदि वरिष्ठ परिजन भोपाल की गोष्ठी में उपस्थित थे। जबलपुर की गोष्ठी में सिवनी से श्री सुंदरलाल बघेल, बालाघाट से श्री ढ़ाल सिंह बिसेन, पांढुरना से श्री अशोक पराडकर, हकटनी से श्री प्रफुल्ल सोनी, सागर से श्री बीपी पाठक, दमोह से श्री पटेल एवं हटा के अग्रणी परिजनों ने विशेष रूप से भाग लिया।

महाराष्ट्र

नागपुर (महाराष्ट्र)

गायत्री शक्तिपीठ जगनाड़े चौक, नागपुर में १७ अप्रैल के दिन भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का राज्य स्तरीय पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित हुआ। शांतिकुंज से आये परीक्षा प्रभारी प्रतिनिधि श्री आरके नायक ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति उन श्रेष्ठताओं का समुच्चय है, जो संसार को स्वर्ग और मानव को महामानव बनाती है। इसे सहेज कर ही राष्ट्र का पुनरुत्थान संभव है। उन्होंने भारतीय संस्कृति के जीवन मूल्यों को नयी पीढ़ी में प्रतिष्ठित करने का आवाहन उपस्थित श्रोताओं से किया।

श्री शरद पारधी जी ने भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा को एक प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षा बताया। देश की १० भाषाओं में ४७ लाख बच्चों के द्वारा दी जा रही परीक्षा की विस्तार से जानकारी देते हुए उन्होंने कहा कि जहाँ देश में पाश्चात्य संस्कृति के प्रति गहरा आकर्षण है, वहीं लाखों संस्कारवान बच्चे अपनी संस्कृति और समाज के प्रति संवेदनशील हैं, आत्मविकास के लिए उत्साहित हैं। भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा ने उनमें धर्म-अध्यात्म एवं जीवन मूल्यों के प्रति नयी अवधारणा बनायी है।

समारोह में मंचासीन श्री शरद पारधी, श्री आरके नायक, श्रीवास्तव

दक्षिण पश्चिम जोन के परीक्षा प्रभारी श्रीयुत् श्रीवास्तव जी ने प्रत्येक विद्यालय में प्रार्थना के समय बच्चों में नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए कम से कम ५ मिनट का समय निर्धारित करने का आवाहन किया।

वर्ष २०११ में महाराष्ट्र के २ लाख विद्यार्थियों को परीक्षा में शामिल करने का संकल्प लिया गया। कार्यक्रम में श्री सत्यनारायण नुवाल, श्रीकृष्ण व्यास, डॉ. फरकाडे तथा महाराष्ट्र के १६ जिलों से पधारे विद्यार्थी, गणमान्य एवं नैष्ठिक कार्यकर्त्ता उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री शंकर भावरकर एवं श्रीमती कल्पना बिसेन ने किया।

नैतिक मूल्यों के प्रति बढ़ती जागरूकता से उत्साहित है समाज

देहरादून (उत्तराखंड)

उत्तराखण्ड विधानसभा अध्यक्ष श्री हरवंश कपूर ने देहरादून जिले में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में अग्रणी रहे विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए जीवन मूल्यों के प्रति उनके उत्साह और जागरूकता की सराहना की। उन्होंने अपने वक्तव्य में विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों के प्रति बढ़ती उदासीनता के प्रति गहरी चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि आज के विद्यार्थी कल के भारत का भविष्य हैं। जो अपने देश की प्रगति और उन्नति की कामना करते हैं, उन्हें उभरती पीढ़ी को संस्कारवान बनाने के प्रयास करने चाहिए। उन्होंने इस दिशा में गायत्री परिवार द्वारा की जा रही पहल की खूब सराहना की।

पुरस्कार वितरण समारोह में शांतिकुंज से प्रो. विश्वप्रकाश त्रिपाठी की टोली पहुँची थी। प्रत्येक कक्षा में अग्रणी रहे विद्यार्थियों के साथ जिले में शिक्षा आन्दोलन के प्रमुख सहयोगी आचार्य एवं परिजनों को भी सम्मानित किया गया। विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र, पदक, युग साहित्य एवं नकद पुरस्कार प्रदान किये गये। समारोह में भासंज्ञाप की जिला संयोजिका सुश्री प्रवीणा रस्तोगी, सर्वश्री सुरेश डंगवाल, विपिन बिहारी श्रीवास्तव, राधेश्याम शर्मा एवं एडवोकेट शांति प्रकाश शर्मा सहित अनेक कर्मठ परिजन और विद्वान उपस्थित थे।

ग्वालियर (मध्य प्रदेश) - प्रज्ञापीठ लश्कर में २२ अप्रैल को ग्वालियर जिले का भासंज्ञाप का जिला स्तरीय पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित हुआ। शांतिकुंज प्रतिनिधि डॉ. पीडी गुप्ता ने समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहा कि पाश्चात्य संस्कृति के प्रति आकर्षित होकर हमारी युवा पीढ़ी प्रेम, दया, करुणा, मैत्री, सद्भाव जैसे सद्गुणों से वंचित होती जा रही है। भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा बच्चों को इसी दुष्प्रभाव से बचाते हुए उनमें श्रेष्ठ विचारों, भाव संवेदनाओं और मानवीय मूल्यों को विकसित करने का एक आन्दोलन है।

शांतिकुंज प्रतिनिधि के विचारों का अन्य विशिष्ट अभ्यागतों श्री ब्रह्मजीत कुशवाह-प्राचार्य रामश्री इंटरनेशनल हाईस्कूल ग्वालियर, श्री हेमंत गुप्ता-शाखा प्रबंधक, सेण्ट्रल बैंक ग्वालियर, श्री एसपी गुप्ता-आईएएस-पूर्व संचालक लोक शिक्षण मध्य प्रदेश ने भी एकमत से समर्थन किया। श्री गुप्ता जी ने कहा कि यही कारण है कि उन्होंने मध्य प्रदेश शासन की ओर से प्रदेश के समस्त विद्यालयों में भासंज्ञाप. के संचालन हेतु परिपत्र जारी किया था।

परीक्षा की सफलता में अमूल्य सहयोग देने वाले शिक्षकगण सर्वश्री आरएस त्रिपाठी-मुरार, एनके जैन-पिछोर डबरा, संजीव कुमार बंसल-भितरवार, केके दिवाकर-ग्वालियर, सुरेन्द्र सिंह गुर्जर-ठाटीपुर, श्रीमती वंदना चतुर्वेदी-लश्कर को स्मृति चिह्न प्रदान किये गये। अभिनव विद्या मंदिर लश्कर, बाल विद्या निकेतन मुरार एवं गायत्री उमावि् लश्कर को क्रमश: सर्वाधिक छात्र परीक्षा में शामिल करने के लिए सम्मानित किया गया। श्री निहाल सिंह मुरार, श्री रामभरोसे लाल शर्मा भितरवार एवं श्री गोविंद बिहारी गुप्ता ग्वालियर भी विशिष्ट सेवाओं के लिए सम्मानित किये गये।

छत्तीसगढ़ में हुए विद्याविस्तार के विशिष्ट प्रयोग

गुरु गरिमा शिविर

राजनांदगाँव (छत्तीसगढ़)

गायत्री शक्तिपीठ राजनांदगाँव पर १ मई को गुरु गरिमा शिविर का आयोजन करते हुए भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में सहयोगी रहे गुरुओं तथा विशिष्ट योग्यता प्राप्त विद्यार्थियों का सम्मान किया गया। इस उपलक्ष्य में उन्हें पदक एवं नगद धनराशि प्रदान किये गये। गायत्री विद्यापीठ प्रमुख श्री नंदकिशोर सुरजन ने इस अवसर पर शिक्षक एवं गुरु की व्याख्या करते हुए समाज एवं राष्ट्र के विकास का पथ प्रशस्त करने वाली नयी पीढ़ी के निर्माण का आह्वान गुरुजनों से किया। उन्होंने कहा कि गुरु वह है जो अपने विद्यार्थी को पुस्तकीय ज्ञान देने के साथ उसकी बुरी आदतों को दूर कर संस्कारवान बनाने की भी चेष्टा करता है।

श्री मुरलीधर साहू ने कहा कि देश को आज आलीशान महलों को बनाने वाले इंजीनियरों से कहीं ज्यादा राष्ट्र निर्माता महामानवों की आवश्यकता है। प्राचार्य अंजु आहुजा ने शिक्षकों को पेशे की मानसिकता से उबरने और शिक्षण को धर्म की तरह अपनाने की प्रेरणा दी। उन्होंने गत वर्ष ७००० की तुलना में इस वर्ष राजनांदगाँव में १९००० विद्यार्थी भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में शामिल किये जाने के श्री मुरलीधर साहू के अथक पुरुषार्थ की भरपूर सराहना की। श्री विनोद शंकर कौशिक शिविर में विशेष रूप से आमंत्रित थे। श्री जयंतीभाई पटेल, श्री जुगल किशोर लड्ढा, श्री सुनील ठक्कर, श्री प्रेम सिंघल आदि का विशेष सहयोग रहा। शिविर का समापन श्री हरीश गाँधी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

विद्यार्थी व्यक्तित्व परिष्कार शिविर

पत्थलगाँव (छत्तीसगढ़)

गायत्री परिवार पत्थलगाँव शाखा द्वारा किलकिला ग्राम में पाँच दिवसीय व्यक्तित्व परिष्कार शिविर का अयोजन हुआ। इसमें सीतापुर एवं लैलुंगा के युवाओं सहित पूरे जिले से आये १५० से अधिक भाई-बहिनों ने भाग लिया। शिविर में मानव जीवन की गरिमा पर चर्चा के साथ स्वास्थ्य रक्षा, बाल संस्कार शाला, संचालन,

पर्यावरण संरक्षण, युवा संगठन, जल संरक्षण जैसे सर्वोपयोगी विषयों की जानकारी और आवश्यक प्रशिक्षण दिया गया। शिविरार्थियों के रक्त ग्रुप की नि:शुल्क जाँच करते हुए उन्हें आवश्यकता पड़ने पर रक्तदान के लिए प्रेरित किया।

पत्थलगाँव क्षेत्र में लगा यह अपनी तरह का पहला शिविर था, जिसका संचालन राजनांदगाँव से आयी बहिन मीता ठक्कर, अहिल्या साहू, मनीषा एवं सालिकराम साहू की टोली ने किया। शिविरार्थियों में जीवन साधना के प्रति शानदार उमंग जागी। शिविर का समापन ९ कुण्डीय यज्ञ से हुआ, जिसमें ८५ लोगों ने दीक्षा लेकर 'हम बदलेंगे-युग बदलेगा' को जीवन में चरितार्थ करने का संकल्प लिया। शिविरार्थियों को समाज के उत्कर्ष के लिए सक्रिय भागीदारी की प्रेरणा और दिशा मिली। अंबिकापुर से आये दक्षिण पूर्वी जोन के समन्वयक श्री एसजे द्विवेदी द्वारा शिविरार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये गये। उल्लेखनीय है कि इसमें बहिनों ने विशेष उत्साह दिखाते हुए '२१वीं सदी नारी सदी' के उद्घोष की जीवंत झाँकी प्रस्तुत की थी। शिविर समापन पर पूरे गाँव में व्यसनमुक्ति रैली निकाली गयी।

ठगना बुरी बात है, पर ठगाना उससे कम बुरा नहीं है।

शताब्दी मंत्र लेखन साधना अभियान ने बढ़ाया शक्तिसाधना का उत्साह

नवरात्रि पर्व पर शक्ति साधना का महत्त्व और उत्साह सर्वविदित है। इस पर्व पर देश और दुनिया में जितनी बड़ी संख्या में गायत्री साधक अनुष्ठान, साधना, प्रार्थना करते हैं उतनी शायद ही किसी अन्य विधि विधान से होती हो। लेकिन परम पूज्य गुरुदेव का जन्म शताब्दी वर्ष होने के कारण इस वर्ष हर क्षेत्र में साधना का उल्लास अनूठा था। शताब्दी मंत्र लेखन साधना अभियान ने क्या नर-नारी, क्या बच्चे-बूढ़े सभी में उज्वल भविष्य की स्थापना के युगांतरीय अभियान में भागीदारी का अभूतपूर्व उत्साह उमड़ा। देशभर में २४ लाख से अधिक मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ कई

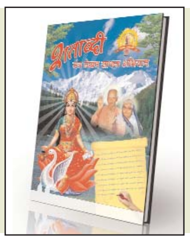

भाषाओं में शांतिकुंज से गयीं। हर जिले-नगरों में विशेष अभियान के अंतर्गत मंत्रलेखन साधना करने वालों की संख्या हजारों में बतायी जा रही है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि नवरात्रि साधना के बाद भी यह उत्साह अभी शिथिल नहीं हुआ है। साधना आरंभ करने वाले अधिकांश लोग आगामी नवंबर माह में हरिद्वार में होने जा रहे विराट सृजन महाकुंभ तक जारी रखने का क्रम चला रहे हैं। एक ओर जहाँ दुनिया महाविनाश की कल्पना से निराश और हताश है, वहीं समझदार साधक युगऋषि के वचनों पर दृढ़ विश्वास रखते हुए विनाश को चुनौती दे रहे हैं।

नागपुर (महाराष्ट्र) – राम नवमी के दिन शक्तिपीठ नागपुर पर आयोजित ९ कुण्डीय यज्ञ के साथ हजारों युग साधकों ने अपने शताब्दी मंत्र लेखन अभियान एवं युगसंधि महापुरश्चरण साधना अभियान की पूर्णाहुति की। पूज्य गुरुदेव की जन्म शताब्दी के

नागपुर में नवरात्रि साधना की पूर्णाहुति करते गायत्री साधक

निमित्त विशेष साधना और सक्रियता का उत्साह परिजनों में दिखाई दिया। अगले चरण में मंत्र लेखन साधना के लिए भी सैकड़ों लोगों ने संकल्प लिये।

हनुमान मंदिर परिसर, यशोदा नगर, हिंगणा रोड़ में हनुमान जयंती (१८ अप्रैल) के दिन आयोजित दीपयज्ञ के साथ भी अनेक लोगों ने शताब्दी मंत्र लेखन साधना अभियान की पूर्णाहुति की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री केबी श्रीवास्तव ने विचार क्रांति अभियान में दीपयज्ञों की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने जन्म शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों की लोगों को जानकारी भी दी।

दोनों पाँवों से अपंग कन्या ने किया कमाल

घोड़ा डोंगरी, बैतूल (म. प्रदेश)

आस्था और संकल्प के सामने कोई अवरोध टिक नहीं सकता। घोड़ा डोंगरी निवासी परिजन श्रीराम मालवीय की बेटी कुमारी सारिका ने परम पूज्य गुरुदेव की जन्म शताब्दी पर ५ लाख गायत्री महामंत्र लेखन की श्रद्धांजलि अर्पित कर इस बात को फिर दोहराया है। उल्लेखनीय है कि सारिका दोनों पैरों से अपंग है।

संकल्पनिष्ठ साधिका कु. सारिका

नैत्रहीन साधक ने कम्प्यूटर पर मंत्रलेखन किया

गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

कौशांबी, गाजियाबाद निवासी मनीष शर्मा ने युगशक्ति गायत्री और मिशन के प्रति अपनी गहन आस्था का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। श्री मनीष जी सूरदास हैं, लेकिन उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव की जन्म शताब्दी के निमित्त पूरे विश्व में भाग लेते हुए कम्प्यूटर पर

श्री मनीष शर्मा

मंत्र लिखे और ४० दिनों में २४०० मंत्र लेखन का अनुष्ठान पूरा किया। उनके द्वारा भेजी गयी मंत्रलेखन की प्रतिलिपि की शैली बताती है कि आँखों की विवशता के कारण बीच-बीच में छोटी-छोटी गलतियाँ तो करते रहे, लेकिन वह आस्था अद्वितीय थी जिसके सुखद सत्परिणाम सुनिश्चित हैं।

उल्लेखनीय है कि चि. मनीष शर्मा ने बचपन में नेत्रहीन होने के बावजूद पढ़ने की शक्ति देने का आग्रह परम वंदनीया माताजी से किया था। तब परम वंदनीया माताजी ने उन्हें पीएच.डी. करने का आशीर्वाद दिया था। माँ की कृपा फली। उन्होंने पीएच.डी. ही नहीं की, जीआरएफ भी पास कर लिया। आज वे दिल्ली विवि. के अंतर्गत स्वामी श्रद्धानंद कॉलेज में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं।

सिंगरौली (मध्य प्रदेश) – चैत्रनवरात्र से रामनवमी तक सृजन साधना में लगभग पाँच हजार परिजनों ने भाग लिया। इनमें स्थानीय विधायक श्री रामलल्लू वैश्य, एनसीएल मुख्यालय के निदेशक श्री ओ.पी. मिश्रा, श्री किशोर पाठक-महाप्रबंधक कार्मिक, श्री राजाराम सिंह-महाप्रबंधक आदि महानुभावों ने भी युगऋषि पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी के युग निर्माण आन्दोलन के प्रति अपनी गहन आस्था व्यक्त करते हुए उनकी जन्म शताब्दी पर चलाये जा रहे विशेष साधना अभियान और उसके पूर्णाहुति समारोह में भाग लिया था।

हाटपीपल्या, देवास (मध्य प्रदेश) हाटपीपल्या के लगभग ५०० परिजनों ने ९ कुण्डीय यज्ञ के साथ अपनी साधना की पूर्णाहुति की और १५०० परिजनों ने आहुतियाँ समर्पित कीं। सैकड़ों साधकों ने शताब्दी मंत्र लेखन साधना की पूर्णाहुति भी की। लोगों में नि:शुल्क साहित्य वितरित किया गया।

समालखा, पानीपत (हरियाणा) – गायत्री शक्तिपीठ समालखा द्वारा चलाये गये मंत्रलेखन अभियान में बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया। श्री गुरुदत्त अनेजा के अनुसार अनेक साधकों ने साधना के सत्परिणामों की अनुभूति भी की। उन्होंने बताया कि इस अभियान से लोगों को जप से कहीं ज्यादा शांति का एहसास हुआ तथा कई लोगों के अपूर्ण कार्य पूरे हो गये है। अभियान के विस्तार में डॉ. महेन्द्र सिंह, जगदीश देशवाल आदि का सहयोग सराहनीय रहा।

पालमपुर, कांगडा (हिमाचल प्रदेश) – नैष्ठिक कार्यकर्त्ताओं की सतत सक्रियता और अथक पुरुषार्थ के आधार पर पालमपुर में शताब्दी मंत्र लेखन अभियान के प्रति अच्छी जन अभिरुचि दिखाई दी। वहाँ १६० लोगों ने मंत्र लेखन साधना में भाग लिया और नवरात्रि के पावन पर्व पर ५ कुण्डीय यज्ञ के साथ उसकी पूर्णाहुति की। यज्ञ संचालक श्री लेखराम शर्मा एवं श्री ओम प्रकाश ने इस अवसर पर युग परिवर्तन की वेला का महत्त्व बताते हुए साधना से उपार्जित ऊर्जा को लोक मंगल के कार्यों में नियोजित करने का आह्वान किया।

सुलूर, कोयंबटूर (तमिलनाडु) – भारतीय वायुसेना स्टेशन सुलूर के अधिकारी-सेनानियों ने युगऋषि के जन्म शताब्दी वर्ष में अपनी भागीदारी करते हुए शताब्दी मंत्र लेखन अभियान में भाग लिया। साधना अभियान की पूर्णाहुति वायुसेना स्टेशन में २४ अप्रैल को आयोजित ११ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ हुई, जिसमें ३०० से अधिक लोगों ने भाग लिया। श्री आके शर्मा कार्यक्रम के मुख्य समन्वयक थे। सुरक्षा अधिकारी श्री आरएन वर्मा, श्री सुरेन्द्र सिंह यादव, इंजीनियर जी चंद्रा, इंजीनियर एसके तिवारी आदि की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री उमेश शर्मा की टोली ने किया।

सुर्खेत (नेपाल) – युगऋषि के जन्म शताब्दी अभियान में वर्षों से जुटे उपजोनल केन्द्र सुर्खेत के प्राणवान कार्यकर्त्ताओं ने नवरात्रि पर्व अथाह श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया। वहाँ श्री जीपी गौतम के मार्गदर्शन में प्रतिदिन यज्ञ एवं दीपयज्ञ सायंकाल हुआ। रामनवमी के दिन ५ कुण्डीय यज्ञ के साथ युग साधकों ने सृजन साधना महापुरश्चरण की पूर्णाहुति की। जन्म शताब्दी मंत्र लेखन अभियान की प्रेरणा देते हुए उपस्थित जनों को ब्रह्मभोज स्वरूप नि:शुल्क मंत्रलेखन पुस्तिकाएँ प्रदान की गयीं। इस अवसर पर कार्यकर्त्ताओं ने अपने जिले के हर गाँव-नगर में यज्ञ शृंखला

सुर्खेत, नेपाल में नवरात्रि साधना की पूर्णाहुति करते युग साधक

चलाते हुए मंत्र लेखन, देवस्थापना, दीवार लेखन आदि अभियानों को गति देने का निर्णय लिया है।

मेरठ (उत्तर प्रदेश) – महिला मण्डल, मेरठ कैण्ट की बहिनों ने १६ अप्रैल को ९ कुण्डीय गायत्री यज्ञ का आयोजन कर शताब्दी मंत्र लेखन साधना और सृजन साधना महापुरश्चरण की पूर्णाहुति की। बहिनों ने वरिष्ठों-विशिष्टों तक युगऋषि का संदेश पहुँचाने के लिए उस दिन सायंकाल एक भजन संध्या एवं दीपयज्ञ का भी आयोजन किया।

भजन संध्या का आयोजन पायल उत्सव मंडप, कंकरखेड़ा, मेरठ कैंट में हुआ, पूर्व विधायक श्री सत्यप्रकाश अग्रवाल कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। शौलाना, गाजियाबाद से आयी श्री राकेश कुमार शर्मा की टोली ने प्रज्ञागीतों के साथ बड़े रोचक और प्रभावशाली ढंग से युग निर्माणी संकल्प प्रस्तुत किये। कैण्ट के बाल प्रज्ञा मण्डल की कन्याओं की भजन प्रस्तुति आकर्षक थी।

मेरठ का पूर्णाहुति आयोजन

कार्यक्रम का संचालन डॉ. उमा अग्रवाल ने किया। व्यापार संघ के अध्यक्ष श्री नीरज मित्तल का मुख्य सहयोग रहा।

मेरठ कैण्ट के महिला मण्डल ने पूज्य गुरुदेव की जन्म शताब्दी के प्रयाज क्रम में २५ कॉलोनियों में जन जागरण अभियान चलाया था। इस अभियान में मंत्र लेखन, बलिवैश्व यज्ञ, देवस्थापना आदि कार्यक्रमों से हर घर को जोड़ने का प्रयास किया गया। हर कॉलोनी में यज्ञ-दीपयज्ञ हुए।

कुक्षी, धार (मध्य प्रदेश) – ग्राम कापसी की शिक्षिका श्रीमती लीला चौहान ने अपने आश्रम विद्यालय की ५३ वनवासी बालिकाओं से जन्म शताब्दी मंत्र लेखन का ४० दिवसीय अनुष्ठान सम्पन्न कराया। उन्होंने कक्षा ६ से ८वीं तक की इन बालिकाओं को इस विशेष मंत्र लेखन साधना का महत्व बताते हुए कहा कि देश के करोड़ों लोगों के सामूहिक प्रयासों से हम अपने देश को एक नयी दिशा और अच्छे नागरिक दे सकते हैं।

गोधरा (गुजरात) – पावन रामनवमी के दिन गायत्री शक्तिपीठ गोधरा पर आयोजित ११ कुण्डीय यज्ञ के साथ सैकड़ों साधकों ने जन्म शताब्दी साधना की पूर्णाहुति की। यह आयोजन शक्तिपीठ के लिए त्रिवेणी संगम की तरह था, जिसमें सृजन साधना महापुरश्चरण की पूर्णाहुति के अलावा शताब्दी मंत्र लेखन साधना करने वाले साधकों ने भी पूर्णाहुति की। उल्लेखनीय है कि गोधरा नगर में ८५१ साधकों ने शताब्दी मंत्र लेखन साधना में भाग लिया था। इसी के साथ शक्तिपीठ ने २९वाँ वार्षिकोत्सव भी मनाया।

कार्यक्रम का संचालन अहमदाबाद से आयीं सुश्री राजबाला बेन ब्रह्मभट्ट की टोली ने किया। उन्होंने जन्म शताब्दी वर्ष की योजनाओं, कार्यक्रमों की विस्तार से जानकारी देने के साथ उनमें बढ़चढ़कर भाग लेने के लिए जनमानस को प्ररित किया। इस कार्यक्रम में संस्कार भी बड़ी संख्या में सम्पन्न हुए।

राष्ट्र का नवनिर्माण जागरूक बुद्धिजीवियों से ही संभव है।

जन्म शताब्दी वर्ष में शिखर पर है श्रद्धा, सक्रियता, समर्पण भाव

पंजाब में 108 कुंडीय यज्ञ, लोकप्रिय हो रहा है वैज्ञानिक अध्यात्मवाद

मंडी गोविंदगढ़ (पंजाब)

विशिष्ट अतिथियों को सम्मानित करते शांतिकुंज प्रतिनिधि

पूर्वांचल सभा मंडी गोविंदगढ़ द्वारा गायत्री शक्तिपीठ मोहाली के सहयोग से दिनांक २७ मार्च को १०८ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ आयोजित किया गया। इसमें शांतिकुंज के संदेश और क्षेत्रीय विभूतियों के अनुभवों को सुनकर लोगों ने यज्ञ की वैज्ञानिकता समझी और दैनिक जीवन में यज्ञ को समाविष्ट करने के लिए सहमत हुए। शांतिकुंज प्रतिनिधि प्रो. विश्वप्रकाश त्रिपाठी ने औद्योगिक नगरी को प्रदूषण से बचाने के लिए यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ उपचार बताया।

मंडी गोविंदगढ़ के यज्ञ में लगभग २५०० लोगों ने भाग लेते हुए क्षेत्र में यज्ञ शृंखला को आगे भी बनाये रखने का संकल्प लिया। शक्तिपीठ मोहाली के प्रबंध ट्रस्टी श्री चंद्रमोहन शर्मा ने बीच-बीच में पंजाबी में यज्ञ की टिप्पणियाँ करते हुए क्षेत्रीय जनता के लिए सहज ग्राह्य बना दिया। यज्ञ में युग निर्माण योजना विशेषांक की २००० प्रतियाँ वितरित की गयीं। १८०० भाई-बहिनों ने बलिवैश्व यज्ञ करने के संकल्प लिये।

इस कार्यक्रम के आयोजन में श्री चेतराम गौड़, पूर्वांचल सभा के अध्यक्ष एवं प्रवासी भलाई बोर्ड के डायरेक्टर की मुख्य भूमिका रही। सांसद श्री अविनाश राय खन्ना कार्यक्रम के मुख्य अतिथि और सरहिंद के विधायक श्री दीदार सिंह भट्टी एवं पंजाब यूथ विकास बोर्ड के अध्यक्ष श्री गुरप्रीत सिंह राजू खन्ना विशिष्ट थे। सांसद श्री अविनाश राय खन्ना ने अपने कई अनुभव बताते हुए यज्ञ को विश्वशांति का सबसे प्रभावशाली कार्य बताया और यज्ञ शृंखला को पंजाब में जारी रखने का आग्रह किया।

रंग ला रही है एक देवी की आस्था

कोटद्वार, पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

पूज्य गुरुदेव का कथन है कि युग परिवर्तन का आधार होंगी जाग्रत् भाव संवेदनाएँ। इसी संवेदना के बल पर कोटद्वार की शबरी श्रीमती माहेश्वरी ध्यानी ने अपने नगर में पूज्य गुरुदेव के क्रांतिकारी चिंतन को स्थापित करने में आशातीत सफलता पायी। उनके द्वारा २५ से २८ अप्रैल की तारीखों में आयोजित प्रज्ञा पुराण कथा एवं गायत्री महायज्ञ के समय लगभग ५०० लोगों ने दैनिक बलिवैश्व करने, साप्ताहिक दीपयज्ञ करने, गौरक्षण करने, व्यसन त्यागने आदि के संकल्प लिये। कार्यक्रम संचालन के लिए शांतिकुंज से सर्वश्री सूरत सिंह अमृते, संतोष नामदेव, प्रेमलाल बिरला एवं रविन्द्र कुमार की टोली पहुँची थी।

कार्यक्रम का आरंभ १५१ कलशधारी बहिनों के संग निकली शोभायात्रा के साथ हुआ। दैनिक कथा में औसतन ४०० लोगों की उपस्थिति रही। व्यक्ति और परिवार निर्माण के बहुमूल्य सूत्रों को संगीत और सरस कथानकों के साथ उकेरा गया। बच्चों में श्रेष्ठ संस्कारों का आरोपण, स्वास्थ्य, समाज सेवा जैसे अनेक विषयों पर चर्चा हुई। ४० दीक्षा सहित अनेक संस्कार हुए। कार्यक्रम आरंभ होने से पहले स्थानीय परिजनों सर्वश्री ध्यानी बहिन, लालचंद बोहरा, नत्थूलाल रस्तोगी, भरत सिंह कण्डारी, हरीश पोखरियाल, रमेशचंद्र ममगाई, डॉ. बीएन जोशी, सुभाष राना, कैलाश चंद्र अग्रवाल आदि ने पम्पलेट, बैनर, घर-घर संपर्क आदि से नगर के हर घर तक इस कार्यक्रम का संदेश और आमंत्रण पहुँचाया था।

कार्यक्रम संयोजिका श्रीमती माहेश्वरी ध्यानी जनमानस में जिस आस्था का बीजारोपण करना चाहती थीं, उसका साकार रूप उनके जीवन में भी दिखाई दिया। अपने इष्टदेव की जन्म शताब्दी पर उन्होंने अपने सुहाग का प्रतीक सोने का हार समर्पित करते हुए उसे शांतिकुंज प्रतिनिधियों को सौंप दिया। आदरणीया शैल जीजी, आदरणीय डॉ. साहब ने इस आस्था का अभिनंदन करते हुए कहा कि ऐसी दिव्य आत्माएँ समाज की अनमोल धरोहर हैं। चित्र में श्रीमती माहेश्वरी ध्यानी आरती उतारते हुए।

वार्षिकोत्सव पर विशिष्ट प्रयोग, १०८ घरों में एक साथ हुए यज्ञ

जोबट, अलीराजपुर (म.प्रदेश)

२५ अप्रैल को गायत्री शक्तिपीठ जोबट का स्थापना दिवस मनाया गया। इस उपलक्ष्य में नगर के ११० घरों में एक साथ एक ही समय पर गायत्री यज्ञ का आयोजन हुआ। पूरा नगर वैदिक मंत्रों से गूँज उठा। सुगंधित हवन सामग्री और घृत की आहुतियों से उठी सुवास पूरे नगर पर छा गयी। मन को आह्लादित करने वाली इस दिव्यता की विलक्षण अनुभूति नगर वासियों को हुई। घर-घर यज्ञ संचालन के लिए बड़वानी, धार, झाबुआ और अलीराजपुर से पुरोहित-परिजन पहुँचे थे।

गायत्री शक्तिपीठ जोबट प्रतिवर्ष वार्षिकोत्सव पर ५०-६० घरों में यह प्रयोग करता रहा है। इस वर्ष परम पूज्य गुरुदेव की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में १०० घरों में यज्ञ का लक्ष्य रखा गया था, जिसे स्थनीय कार्यकर्त्ताओं ने अथक पुरुषार्थ और सतत संपर्क से पूरा कर लिया।

वार्षिकोत्सव का शुभारंभ सन् ५८ से मिशन से जुड़े समाजसेवी श्री राजमल अग्रवाल ने ध्वजारोहण के साथ किया। इस अवसर पर उनका विशेष सम्मान भी किया गया। तत्पश्चात् केशरिया बाना पहने पुरोहितों की अनुशासित टोली पूरे जोश और उल्लास के साथ वेद मंत्रोच्चार करते, नारे लगाते हुए रवाना हुई तो नगर में आस्था का सैलाब आ गया।

अपराह्न शक्तिपीठ पर ''संस्मरण गोष्ठी'' आयोजित हुई। मुख्य अतिथि श्री कैलाश विश्वकर्मा और अध्यक्ष श्री महेश चंद्र आचार्य, रामलाल राठौड़, रामरतन श्रीवास्तव, श्रीमती गंगेश्वरी सोनी, बंशीलाल अगाल, बालकृष्ण वाणी सहित १४ वक्ताओं ने जीवन के मार्मिक संस्मरण सुनाते हुए सभी को रोमांचित कर दिया। अवतारी चेतना परम पूज्य गुरुदेव के प्रति श्रोताओं की आस्था बढ़ी। इस अवसर पर भावरा के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री रमेशचंद्र शाह और उनकी धर्मपत्नी ने शक्तिपीठ उ.मा. विद्यालय जोबट की शिक्षा प्रसार योजना का सहयोग करते हुए ५१०००रु. का अनुदान दिया।

ज्ञानरथ की प्रशंसनीय सेवाएँ : १४२ पंचायतों तक पहुँचाई मंत्रलेखन पुस्तिकाएँ

प्रतापगढ़ (राजस्थान)

प्रतापगढ़ जिले में शताब्दी मंत्र लेखन साधना का जबरदस्त उत्साह देखा गया। इसके अंतर्गत जिले में कुल ५००० मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ वितरित की गयीं। प्रतापगढ़ तहसील में ११०० तथा धरियावद, छोटी सादड़ी, पीपलखूँट, अरनोद तहसीलों में प्राय: एक-एक हजार लोगों ने मंत्रलेखन साधना की थी। सृजन साधना महापुरश्चरण के अंतर्गत १४२ ग्राम पंचायतों में शक्ति कलश के समक्ष साधना क्रम सम्पन्न हुआ।

रामनवमी के दिन प्राय: हर क्षेत्र में पंच कुण्डीय यज्ञों के साथ साधना अभियान की महापूर्णाहुति की गयी। ग्रामीण कार्यक्रमों में प्राय: हजारों लोगों ने भाग लेते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ यज्ञाहुतियाँ समर्पित कीं।

ग्राम बड़ा धामनिया में आयोजित नौ कुण्डीय यज्ञ में सरपंच श्रीमती संतोष देवी पत्नी श्री बेलुराम मीणा ने यज्ञ की देवदक्षिणा स्वरूप गाँव की सड़क पर पाँच किलोमीटर तक नीम के पौधे लगवा कर मिशन के पर्यावरण आन्दोलन को गति प्रदान करने का संकल्प लिया। तहसील अरनोद की पूर्णाहुति में २८ पंचायतों के भाई-बहिनों ने भाग लिया।

जन्म शताब्दी के साधना अभियान की इस महान सफलता में वहाँ चल रहे ज्ञानरथ का विशेष योगदान रहा। इसे प्रतापगढ़ में विगत दिनों आयोजित पुस्तक मेले के समय श्री निरंजन दरगा-डीटीओ उदयपुर एवं श्री कन्हैयालाल मीणा ने शक्तिपीठ को ज्ञानरथ (मारुति वैन में निर्मित) समर्पित किया था। ज्ञानरथ का उद्घाटन जिला प्रभारी श्री रामचंद्र खराड़ी, श्री रामचंद्र वैष्णव, श्री रामशरण ब्रह्मचारी की मुख्य उपस्थिति में हुआ। ज्ञानरथ में साहित्य प्रदर्शन के अलावा वीडियो फिल्म दिखाने, कार्यक्रमों का संचालन करने जैसी सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं।

साहसिक यात्रा से किया चप्पे-चप्पे का मंथन

बेतिया, प. चंपारण (बिहार)

शक्तिपीठ बेतिया के युवा प्राणवान परिजनों की टोली ने महाशिवरात्रि से रामनवमी तक जन्म शताब्दी रथयात्रा निकालते हुए परम पूज्य गुरुदेव को उनकी जन्म शताब्दी पर शानदार भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित की। ३६ दिनों की यात्रा में सभी १८ प्रखंडों का मंथन करते हुए हर गाँव, नगर और ऐसे सुदूरवर्ती क्षेत्रों तक भी पहुँचाया गया, जहाँ अभी तक मिशन नहीं पहुँचा है। श्री शैलेष कुमार दुबे ने इस यात्रा की योजना बनाने के साथ अगुवानी भी की थी।

जन्म शताब्दी रथ की टोली का मंगल तिलक करने के साथ श्री नागेश्वर दत्त पाण्डेय ने उसे भावभरी विदाई दी। पूज्य गुरुदेव के क्रांतिकारी विचारों वाले जन्म शताब्दी वर्ष की योजना की जानकारी देने वाले पत्रक हर क्षेत्र में पहुँचाये गये। नशा और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जन चेतना जगाने के विशेष प्रयास हुए। रात्रि विश्राम के स्थानों पर दीपयज्ञ आयोजित किये गये। इस अभियान ने जहाँ सैकड़ों लोगों को व्यसनमुक्ति के लिए प्रेरित किया, संकल्प लिये गये, वहीं मंत्र लेखन अभियान के प्रति भी लोगों में अच्छा उत्साह देखा गया।

यह यात्रा सुदूरवर्ती एवं दुर्गम क्षेत्रों में भी पहुँची। रामनगर प्रखण्ड के जंगल, पहाड़ी एवं दोन (दून) क्षेत्र के गाँव हों या फिर पूर्वी उत्तर प्रदेश से सटे सीमावर्ती पिपरासी, मधुबनी, भितहाँ एवं ठकराहाँ प्रखण्ड के पिछड़े हुए गाँव; हर गाँव में ज्ञानयज्ञ की लाल मशाल का आलोक पहुँचा। सुप्रसिद्ध सोमेश्वर पर्वत पर स्थित कालका देवी मंदिर तक का ४० किलो मीटर का दुर्गम मार्ग टोली के सदस्यों ने पैदल ही तय किया और वापस लौटे, लेकिन युगसृजेताओं के प्रखर संकल्प से वह क्षेत्र भी अछूता नहीं रहा।

रथयात्रा टोली में श्री शैलेष कुमार दुबे के साथ सर्वश्री गेना साह, विजय सिंह विजय, चंद्रिका प्रसाद, लालबिहारी चौधरी शामिल थे। श्री नागेश्वर दत्त पाण्डेय, अजय कुमार श्रीवास्तव, किशोरी लाल सिकारिया, द्वारिका प्रसाद स्नेही, श्रीपति पाठक का उल्लेखनीय सहयोग रहा।

निकल पड़ी साइकिल टोली

कैसरगंज, बहराईच (उत्तर प्रदेश)

माँ भगवती आश्रम झिंगरी पुल ने परम पूज्य गुरुदेव की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में साइकिल यात्रा निकाली। श्री लाडली प्रसाद वर्मा के नेतृत्व में निकाली गयी इस यात्रा ने विकासखंड कैसरगंज और फखरपुर की प्रत्येक गाँव सभा में जाकर युगऋषि की जन्म शताब्दी का संदेश पहुँचाया। डॉ. डी पटेल ने हरी झंडी दिखाकर इसे रवाना किया। कैसरगंज में साइकिल रैली के पहुँचने पर पूर्व विधायक दृगराज सिंह, लल्लू सिंह, पंकज त्रिवेदी, प्रधान कौशलेन्द्र चौधरी आदि ने स्वागत किया।

सृजन कुंभ में भागीदारी के लिए उभरे संकल्प

दुधिचुआ, सिंगरौली (मध्य प्रदेश)

२८ अप्रैल को चेतना केन्द्र दुधीचुआ पर जन्मशताब्दी से संबंधित कार्ययोजना पर चर्चा के लिए विशेष गोष्ठी आयोजित हुई, जिसकी अध्यक्षता जोन प्रभारी शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री वीरेन्द्र तिवारी ने की। इस गोष्ठी में ५००-६०० कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। आगामी नवम्बर माह में हरिद्वार में आयोजित हो रहे सृजन महाकुंभ में भागीदारी के लिए लोगों का उत्साह देखते ही बनता था। श्री राणा प्रताप सिंह ने ₹१०००००, श्री रामता प्रसाद शर्मा ने ₹५१००० के अनुदान और उसी श्रद्धा के साथ समयदान-सक्रियता के संकल्प लिये। अधिकांश कार्यकर्त्ताओं ने ₹ ११ हजार से ₹ २४ हजार और ग्रामीण क्षेत्र के कार्यकर्त्ताओं ने ₹ ५-५ हजार के अनुदान की घोषणा की। गोष्ठी का संचालन श्री नरेश कुमार पाण्डेय ने किया। सर्वश्री चंद्रेश्वर, रामसहोदर, पं. रामकृपाल त्रिपाठी, अशोक वर्धन आदि का मुख्य सहयोग रहा।

अनैतिकता के आधार पर खड़ी हुई मैत्री बालू की दीवार की तरह ढह जाती है।

दक्षिण भारत में जन्म शताब्दी की उमंग बढ़ाई, गायत्री को जन-जन तक पहुँचाने वाले युगऋषि की पहचान करायी

१०८ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ, हैदराबाद

हैदराबाद (आँध्र प्रदेश)

जीवन यदि कम्प्यूटर है तो गायत्री मंत्र उसमें प्रवेश करने का पासवर्ड है। जब तक व्यक्ति सद्बुद्धि का सहारा नहीं लेगा, वह न तो जीवन को सही मायने में जान सकता है और न ही मानवोचित जीवन जी सकता है। जहाँ सद्बुद्धि रूपी गायत्री नहीं है, वहीं तमाम समस्याएँ जन्म लेती हैं। आज की हर समस्या का समाधान भी गायत्री ही है।

यह चिंतन शांतिकुंज के प्रमुख प्रतिनिधि आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने हैदराबाद में आयोजित १०८ कुण्डीय यज्ञ में हजारों लोगों को गायत्री की दीक्षा दिलाते हुए प्रस्तुत किया। उल्लेखनीय है कि परम पूज्य गुरुदेव की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में दक्षिणी प्रांतों के संयोजक श्री सुब्बाराव ने यह विशेष श्रद्धांजलि कार्यक्रम २९ अप्रैल से १ मई की तारीखों में आयोजित किया था। उन्होंने इसके माध्यम से पूरे आँध्र प्रदेश को गायत्री को जन-जन तक पहुँचाने वाले ऋषि-परम पूज्य पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी का परिचय दिया था।

यह महायज्ञ हैदराबाद के पीएनएम हाईस्कूल मैदान पर आयोजित हुआ। भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री के. रोशैया और भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री बंडारू दत्तात्रेय सहित अनेक गणमान्य अतिथियों ने भी भाग लिया। २२ जिलों के प्राणवान कार्यकर्त्ताओं और नगर के ३००० लोगों ने इसमें यज्ञाहुतियाँ समर्पित कीं।

आदरणीय डॉ. साहब ने २९ अप्रैल को कलश यात्रा के यज्ञस्थल पहुँचने पर बहिनों पर पुष्पवर्षा करते हुए उनकी भावभरी अगुवानी की। उन्होंने कहा कि दिव्य कलश के रूप में श्रद्धा और संवेदना को मस्तक पर धारण कर विश्वशांति का संदेश देने वाली ये बहिनें ही युग की अभिनव आध्यात्मिक क्रांति में अग्रणी भूमिका निभायेंगी।

अगले दिन प्रात: गुरुचरण पादुकाओं की मंगल आरती करने के बाद आदरणीय डॉ. साहब के स्नेहाशीष ग्रहण करने का अवसर कार्यकर्त्ताओं को प्राप्त हुआ। तत्पश्चात् यज्ञशाला में नये जुड़े हजारों परिजनों को गायत्री की दीक्षा दिलाते हुए शांतिकुंज प्रतिनिधि ने जीवन में गुरु की महत्ता समझायी।

सायंकाल आयोजित दीप महायज्ञ में अपार जनमेदिनी उपस्थित थी। आदरणीय डॉ. प्रणव जी के अलावा इस अवसर पर शांतिकुंज प्रतिनिधि डॉ. बृजमोहन गौड़ एवं स्थानीय वरिष्ठ प्रतिनिधि श्री डॉ. एम. रामकृष्ण ने भी जनमानस को युग संदेश दिया। कार्यक्रम संचालन के लिए शांतिकुंज से श्री परमानंद द्विवेदी, श्री उमेश शर्मा आदि की टोली पहुँची थी।

दीपयज्ञ के अवसर पर परम पूज्य गुरुदेव के आश्वासन को दोहराते हुए आदरणीय डॉ. साहब ने कहा कि उज्ज्वल भविष्य का अवतरण अवश्यंभावी है, लेकिन इतिहास पर दृष्टि डालकर देखें तो पता चलता है कि दुष्टता को पराजित करने के लिए हर बार दिव्य शक्तियों को संगठित प्रयास करने पड़े हैं। यह दीपयज्ञ देवात्माओं को उसी पुण्य परंपरा को दोहराने की प्रेरणा देता है। यह आस्तिकता के विस्तार का, समाजसेवा का, सामूहिकता का विलक्षण यज्ञीय प्रयोग है। इस पावन अवसर पर एक दीप हम भी बनें और वैचारिक प्रदूषण को दूर करने का संकल्प लें।

विशिष्ट आकर्षण

-दीपयज्ञ में शांतिकुंज के युग गायक श्री गोविंद पाटीदार द्वारा तेलुगु भाषा में गाये गये गीत ''हमने आँगन नहीं बुहारा ....'' ने उपस्थित हजारों श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

- केके राजा ग्रुप ने २४ कन्याओं की टोली के साथ

मनमोहक सांस्कृतिक भरत नाट्यम् प्रस्तुत किया। महिषासुर मर्दिनी, दशावतार आदि विशेष आकर्षक थे। हाथ में दीपक लिये घड़ों पर खड़ी होकर कुंड नृत्य करती नन्हीं बालिकाओं की प्रस्तुति अविस्मरणीय थी।

जन-जन की आत्मीयता

कार्यक्रम का आयोजन गायत्री परिवार ने नहीं, बल्कि नगर के गणमान्यों की ४० सदस्यीय समिति और १४० लोगों की स्वागत समिति ने किया था, जो तेलुगु मूल के थे। आयोजक समिति की अध्यक्षता श्री हनुमंत राव ने की। यही कारण था कि यज्ञ में ९८ प्रतिशत तेलुगु भाषी परिजन शामिल हुए। इनमें से ८० प्रतिशत नये जुड़े थे। पूरा कार्यक्रम तेलुगु भाषा में ही सम्पन्न हुआ।

दक्षिण जोन प्रभारी शांतिकुंज प्रतिनिधि डॉ. बृजमोहन गौड़ ने पूज्य गुरुदेव की जन्म शताब्दी को एक महान आध्यात्मिक क्रांति बताते हुए श्रोताओं से उनके विचार क्रांति अभियान में नैष्ठिक भागीदारी के मार्मिक सूत्र बताये। हर याजक-आयोजक ने युगऋषि की जन्म शताब्दी पर सृजन कुंभ आयोजन के लिए अंशदान दिया।

सत्य साईं बाबा को श्रद्धांजलि

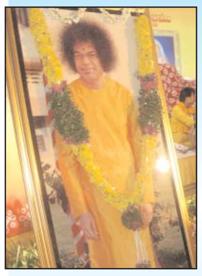

दीपयज्ञ के अवसर पर सत्य साईंबाबा को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। मंच पर उनकी आदमकद फोटो स्थापित की गयी थी, जिस पर समस्त महानुभावों ने अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये। आदरणीय डॉ. साहब ने कहा कि दक्षिणी प्रांत में गायत्री का विस्तार करने वाले साईं बाबा का युग के नवनिर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। उनके द्वारा शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में किये गये कार्यों को लम्बे समय तक याद किया जायेगा।

युगऋषि और उनके विराट मिशन की झाँकी

हैदराबाद शाखा दक्षिणी प्रांतों में मिशन का नेतृत्व करते हुए हर वर्ष बड़े-बड़े कार्यक्रम आयोजित करती रही है, लेकिन १०८ कुण्डीय जैसा कोई बड़ा यज्ञीय आयोजन वहाँ कई वर्षों से नहीं हुआ था। पूज्य गुरुदेव की जन्म शताब्दी पर उनके विराट् स्वरूप का बोध कराने के लिए इस प्रकार के बड़े कार्यक्रम की वहाँ नितांत आवश्यकता थी, जिसने अपना प्रयोजन बखूबी सिद्ध किया। लोगों को मिशन के विराट् स्वरूप की झाँकी देखने का अवसर मिला।

श्री बंडारू दत्तात्रेय आरती करते हुए

पूरे नगर में पूज्य गुरुदेव-माताजी के बड़े-बड़े होर्डिंग लगाये गये। 'भक्ति' चैनल पूरे कार्यक्रम का प्रसारण किया। व्यापक प्रचार-प्रसार के समय पूछा गया-क्या आप जानते हैं कि गायत्री को घर-घर पहुँचाने वाले युगऋषि कौन हैं? यह कार्यक्रम उन्हीं का है।

श्री के. रोशैया मंच से उद्बोधन देते हुए

युगधर्म निभाने को उत्साहित है युवाशक्ति

अंबाजी, साबरकांठा (गुजरात)

सुप्रसिद्ध तीर्थ अंबाजी के सुरम्य वातावरण में मोडासा के युवकों के लिए २२ से २४ अप्रैल की तारीखों में 'युवाशक्ति एवं राष्ट्र जागरण' विषय पर विशिष्ट शिविर का आयोजन किया गया। श्री हरेश कंसारा के अनुसार साबरकांठा जिला गायत्री परिवार, युवा क्रांति दल एवं गायत्री तीर्थ अंबाजी के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित इस शिविर में १८ से ४० वर्ष के ५०० युवाओं ने भाग लेकर अपनी राष्ट्रभक्ति को सार्थक करने की दिशा में नयी ऊर्जा और प्रेरणा प्राप्त की।

शिविर का शुभारंभ गायत्री तीर्थ अंबाजी के कार्यवाहक श्री शंकरभाई एवं श्रीमती डाह्यीबेन पटेल तथा श्री पंकज भाई पटेल ने किया। श्री मनहर भाई, श्री प्रवीण भाई पंचाल, श्री चंद्रकांतभाई पंड्या (लीलछा), श्री महेन्द्रभाई पटेल (वडोदरा) आदि ने अलग-अलग विषयों पर उद्बोधन देते हुए युवाशक्ति को उसकी क्षमताओं का बोध कराते हुए उसके सदुपयोग की प्रेरणा दी।

उन्होंने कहा कि विज्ञान शक्ति के बिखराव की धारा सिद्ध हो रही है, जबकि अध्यात्म शक्ति के जागरण और केन्द्रीकरण की विधा है। अध्यात्म ही मानव को महामानव बनाता है। अत: हमें पश्चिम के अंधानुकरण की समीक्षा करते हुए ध्वंस नहीं, सृजन का मार्ग ही अपनाना चाहिए। युगऋषि पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा प्रतिपादित विवेक और विज्ञान की कसौटी पर सत्य सिद्ध होने वाले अध्यात्म का अभ्यास कर और इसे जन-जन तक पहुँचाकर अपनी-अपनी क्षमता और राष्ट्रप्रेम का परिचय देना चाहिए।

शिविर में योग, ध्यान, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का भी समावेश था। श्री राजूभाई पटेल (कलोल) और श्री अमृतभाई पटेल (रिवास) द्वारा युवाओं के लिए उपयोगी साहित्य नि:शुल्क वितरित किया गया।

साईंखेड़ा, बैतूल (मध्य प्रदेश)

विकासखंड मुलताई के युवा प्रकोष्ठ ने साईंखेड़ा में युवा चेतना शिविर का आयोजन कर क्षेत्र की तरुणाई में नवसृजन आन्दोलन को गति देने का शानदार उत्साह जगाया। मुख्य अतिथि श्री कैलाश वर्मा ने इस अवसर पर प्रकृति और संस्कृति पर छाये संकट की ओर ध्यानाकर्षित करते हुए युवाओं की भाव संवेदना जगाने और परस्पर सहयोग का वातावरण तैयार करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि देश की ग्रामीण संस्कृति में वह परंपरा रही है, जिसमें गाँव की हर बेटी को पूरा गाँव अपनी बेटी मानता था और उसके विवाह में हर परिवार सहयोग करता था। आज तो संयुक्त परिवार ही नजर नहीं आते।

विकासखंड प्रभारी श्री टी.के. चौधरी ने मध्य प्रदेश में चल रहे पंच महाअभियानों की विस्तार से जानकारी दी। आमला प्रभारी शिशुपाल डडोरे जैविक खेती और जल संरक्षण को प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि जल के बिना जीवन अधूरा है। कोई भागवत करे या न करे, अपने जीवन में वृक्षारोपण अवश्य करे।

शिविर में पूज्य गुरुदेव की जन्म शताब्दी के कार्यक्रमों की जानकारी दी गयी। श्री अजय पंवार ने उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला। मुख्य वक्ता श्री डीडी उइके ने बड़े ही मार्मिक ढंग से अपनी मातृभूमि का कर्ज चुकाने के लिए युवाओं को जाग्रत् किया। श्री अनिरुद्ध मिश्रा ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया।

श्रेष्ठ मार्ग पर कदम बढ़ाने के लिए ईश्वर विश्वास एक सुयोग्य साथी की तरह सहायक सिद्ध होता है।

गुरुसेवा के भाव से करेंगे वृक्षों की सेवा

तरु-सेवक बने शांतिकुंज के कार्यकर्त्ता, वृक्षों के पालन-पोषण का संकल्प लिया

शांतिकुंज को परम पूज्य गुरुदेव ने अपना शरीर कहा है। अत: इसके उत्कर्ष के लिए किया गया हर कार्य पूज्य गुरुदेव की सेवा है। 'तरु-सेवक' के रूप में आज हम जिन वृक्षों के संरक्षण-पोषण का संकल्प ले रहे हैं, उनकी सेवा पूज्य गुरुदेव की सेवा मानकर ही हम करें। सेवा हमारा धर्म है। हमें उसके परिणाम की चिंता नहीं करनी है, अपना धर्म निभाना है। वस्तुत: वृक्षों के पोषण से सेवा और संवेदना के जो संस्कार हमारे अंदर विकसित होंगे, वह हमारे लिए बड़ी उपलब्धि होगी।

तरुपूजन करते तरुसेवक

शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री सूरज प्रसाद शुक्ल ने 'वृक्षगंगा अभियान' के अंतर्गत १५ मई को वृक्षों के पोषण के लिए कार्यकर्त्ताओं द्वारा आरंभ की गयी 'तरु-सेवक' योजना के संकल्प समारोह में यह आत्माभिव्यक्ति की। इस अवसर पर उनके साथ लगभग १०० कार्यकर्त्ताओं ने इस आशय के संकल्प लिये।

इससे पूर्व आदरणीया शैल जीजी ने अभियान के प्रति अपनी शुभकामना व्यक्त करते हुए कहा कि पेड़ लगाना आसान है, लेकिन उसे पालना सहज नहीं है। यदि वृक्षों के पोषण की परंपरा समाज में चल पड़े तो हरीतिमा संवर्धन की दिशा में एक बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। समाज गायत्री परिवार के हर कार्य को एक आदर्श के रूप में देखता है। आप जो कार्य आरंभ करते हैं, वह देश की हजारों शाखाओं को प्रेरणा देता है। अत: तरु-सेवक के रूप में आप एक अभियान को जन्म दे रहे हैं। शांतिकुंज व्यवस्थापक गौरीशंकर शर्मा जी ने भी इस पहल के लिए कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन करते हुए अपनी शुभकामनाएँ दीं।

योजना का नेतृत्व कर रहे श्री विष्णु मित्तल ने इस अभियान को स्वास्थ्य, पर्यावरण, संगठन, सेवा आदि अनेक दृष्टि से उपयोगी बताते हुए सभी भाइयों से प्रात:काल एक साथ एक घंटे का समय और श्रम तरु-सेवक के रूप में लगाने का आग्रह किया। उन्होंने पूरे परिवार के साथ अपने संकल्पित वृक्ष की सेवा करने की प्रेरणा दी, ताकि सेवा के संस्कार परिवार के हर सदस्य में विकसित हो सकें।

संकल्प समारोह विवि परिसर में गोशाला परिसर के निकट अमराई में आयोजित किया गया। इसके अंतर्गत विवि. परिसर में लगे सैकड़ों आम्रवृक्षों की सुव्यवस्थित देखभाल करते हुए प्रतिदिन उनकी सेवा करने का संकल्प गायत्री मंत्रोच्चारण, स्वस्तिवाचन आदि के साथ लिया है। प्रत्येक कार्यकर्त्ता ने दो-दो वृक्षों के पालन-पोषण की जिम्मेदारी ली। पहले दिन से ही कार्य आरंभ करते हुए १५० से अधिक वृक्षों के थाँवले बनाये गये और उन्हें खाद-पानी दिया गया। कार्यक्रम का समापन प्रसाद वितरण, शांतिपाठ के साथ हुआ।

आदरणीया जीजी दलनायक श्री मित्तल जी को संकल्पसूत्र देते हुए

अपने-अपने पेड़ों के थाँवले बनाते तरुसेवक कार्यकर्त्ता

हथकरघा प्रशिक्षण का त्रैमासिक सत्र एक जुलाई से

भारत सरकार के खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग के सहयोग से शांतिकुंज -देसंविवि में चल रहे 'खादी कताई और बुनाई' का दूसरा त्रैमासिक प्रशिक्षण सत्र 01 जुलाई 2011 से आरंभ हो रहा है। जो इसमें भाग लेना चाहते हैं, वे अविलंब पत्र, फैक्स (01334-260866), फोन-(01334-260602, विस्तार 103, 104) से संपर्क करें। स्थान सीमित हैं

हरिद्वार में आगजनी

शांतिकुंज ने पीडितों की सुध ली, तत्काल राहत सामग्री दी

हम पीड़ित मानवता के प्रति अपना धर्म पूरी तत्परता के साथ निभा रहे हैं, यह अपने लक्ष्य के प्रति अटूट निष्ठा का परिचय है। परम पूज्य गुरुदेव कहते रहे हैं कि युग को बड़ी-बड़ी बातें कहने वालों की नहीं, समय की माँग के अनुरूप जागरूक रहकर कुछ करने वालों की आवश्यकता है। हम अपने इष्ट की आकांक्षा के अनुरूप अपने दायित्वों को निभाते रहें, इसी में हमारे शिष्यत्व की सार्थकता है।

शांतिकुंज के राहत दल से सामग्री ग्रहण करते पीड़ित परिवार

शांतिकुंज व्यवस्थापक एवं शांतिकुंज आपदा प्रबंधन दल के नायक आदरणीय श्री गौरीशंकर जी ने यह बात हरिद्वार में आगजनी से पीड़ित परिवारों को राहत सामग्री प्रदान कर लौटे दल का उत्साहवर्धन करते हुए कही।

उल्लेखनीय है कि १० मई की दोपहर को हरिद्वार के प्रसिद्ध चण्डीघाट के निकट भीषण आगजनी में लगभग १०० झोंपड़ियाँ पूरी तरह से जलकर खाक हो गयी थीं। इसकी प्रथम सूचना मिलते ही शांतिकुंज का आपदा प्रबंधन दल तुरंत सक्रिय हो गया। शांतिकुंज ने सभी पीड़ितों को ११ और १२ मई को दोनों समय का भोजन ले जाकर कराया।

शांतिकुंज के आपदा प्रबंधन दल ने अपनी शैली के अनुरूप सबसे पहले पीड़ित परिवारों का सर्वे किया और फिर आदरणीय डॉ. साहब-आदरणीया शैल जीजी से प्राप्त निर्देशानुसार उन्हें अपना घर पुन: बसाने के लिए आवश्यक सामग्री प्रदान की। प्रत्येक परिवार को एक तिरपाल, दो कंबल, बर्तन सेट (दो थाली, दो कटोरी, एक लोटा, दो भगोने) और सूखा राशन (पाँच किलो आटा, दो किलो चावल, एक किलो दाल, एक किलो नमक) प्रदान किये। राहत दल का नेतृत्व श्री विष्णु मित्तल और श्री राकेश जायसवाल ने किया।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय

गायत्रीकुंज-शांतिकुंज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)-249411

स्थापना वि. स. २०५८-५९

प्रवेश सूचना (जुलाई 2011-12)

उत्तराखण्ड शासन के अधिनियम द्वारा स्थापित, एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अनुमोदित तथा श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, शांतिकुंज, हरिद्वार द्वारा संचालित।

स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम
(अवधि 2 वर्ष)

1. (**M.Sc.**) योगविज्ञान एवं समग्र स्वास्थ्य
2. **(M.A./M.Sc.)** मनोविज्ञान
3. (**M.A.**) व्यावहारिक योग एवं मानव उत्कर्ष
4. (**M.A.**) प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं इतिहास
5. (**M.A.**) पर्यटन प्रबंधन
6. (**M.A.**) पत्रकारिता एवं जनसंचार
7. (**M.A.**) व्यावहारिक शिक्षा
8. (**M.Sc.**) कम्प्यूटर विज्ञान

पंचवर्षीय इंटीग्रेटेड पाठ्यक्रम
स्नातक (3 वर्ष) + स्नातकोत्तर (2 वर्ष)

बी.ए. :

1. मनोविज्ञान
2. अंग्रेजी साहित्य
3. संस्कृत साहित्य
4. भारतीय संस्कृति
5. शिक्षा शास्त्र
6. पर्यटन प्रबंधन
7. योगविज्ञान एवं मानव चेतना

(इनमें से कोई तीन विषय लेना होगा)

बी.एस-सी.-

1. मानवीय चेतना एवं योगविज्ञान
2. मनोविज्ञान
3. कम्प्यूटर एप्लिकेशन
4. गणित
5. पर्यावरण विज्ञान

डिप्लोमा पाठ्यक्रम
(अवधि 1 वर्ष)

1. पत्रकारिता एवं जनसंचार
2. मानवीय चेतना एवं योग चिकित्सा
3. थ्री-डी एनीमेशन एवं विजुअल इफेक्ट्स

बी०एड० पाठ्यक्रम
(अवधि 1 वर्ष)

प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम
(अवधि 06 माह)

1. समग्र स्वास्थ्य प्रबंधन
2. धर्म विज्ञान
3. योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा
4. उद्यमिता विकास
5. हस्त करघा प्रौद्योगिकी प्रमाण पत्र
6. फाउण्डेशन ऑफ विजुअल इफेक्ट्स
7. जल संसाधन एवं नदी प्रबंधन

महत्त्वपूर्ण तिथियाँ

आवेदन पत्र का प्रदाय :	: अप्रैल प्रथम सप्ताह से
आवेदन पत्र भरकर जमा करने की अंतिम तिथि	: 08 जून 2011
प्रवेश परीक्षा की तिथि	: 19 जून 2011

(बी.एड. की प्रवेश परीक्षा 20 जून 2011 को होगी)

संपर्क सूत्र

कुलसचिव, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शांतिकुज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)-249411 ***दूरभाष :*** 91-1334-261485, 261367 एक्सटेंशन: 5489, 5490, 5436 ***फैक्स :*** 91-1334-260723 वेबसाइट-**www.dsvv.org** ***ई-मेल :*** **registrar@dsvv.org**

विवरण पुस्तिका/ आवेदन फार्म हेतु

विशेष ज्ञातव्य : निर्देश पुस्तिका आवेदन पत्र सहित कार्यालय से रु. 200/- (रुपये दो सौ मात्र) एवं डाक से रु. 250/-(रुपये दो सौ पचास मात्र) देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार के नाम बैंक ड्राफ्ट भेजकर मँगायी जा सकती है। प्रवेश संबंधी अर्हता, चयन प्रक्रिया आदि की जानकारी एवं निर्देश हेतु विश्वविद्यालय की वेबसाइट **www.dsvv.org** का अवलोकन करें।

दिल खोलकर हँसना और मुस्कराते रहना चित्त को प्रफुल्लित रखने की एक अचूक औषधि है।

अत्यधिक लालच और दिखावे की संस्कृति से हो रहा है जीवन मूल्यों का ह्रास

कबीर शांति मिशन, लखनऊ के २१वें वार्षिकोत्सव में शांतिकुंज का संदेश

लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

वैश्वीकरण की वर्तमान होड़ ने अत्यधिक लालच की प्रवृत्ति को जन्म दिया है। व्यक्ति किसी भी तरह अधिक से अधिक धन कमाना चाहता है। जब-जब लालच बढ़ेगा, तब-तब संवेदनाएँ सूखती चली जायेंगी, ब्राह्मणत्व का ह्रास होता जायेगा और मानवीय मूल्यों में गिरावट आयेगी। आज की संस्कृति दिखावे की संस्कृति है, जिसमें लालच का कोई अंत नहीं। दिखावे की संस्कृति ने ही जीवन मूल्यों का सर्वनाश किया है।

ऊपर मंचासीन (बायें से दायें) श्री राकेश मित्तल, श्री रमेशचंद्र त्रिपाठी, डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, महामहिम श्री जोशी जी एवं गणमान्य

अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख प्रतिनिधि आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने यह विचार २४ अप्रैल को कबीर शांति मिशन द्वारा आयोजित २१वें वार्षिकोत्सव में व्यक्त किये। वे सिटी मॉण्टेसरी स्कूल, गोमती नगर के भव्य सभागार में आयोजित इस समारोह में ''आधुनिकीकरण एवं मूल्य बिखराव'' विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में अपने विचार व्यक्त कर रहे थे।

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने परम पूज्य गुरुदेव की अत्यंत महत्त्वपूर्ण पुस्तक 'सतयुग की वापसी' के उद्धरणों की व्याख्या करते हुए कहा कि आखिर जीवन मूल्यों के बारे में कौन सोचेगा? पढ़ा-लिखा वर्ग ही इस दिशा में विचार करेगा। वही परिस्थितियों को बदलेंगे जिन्हें समाज का नेतृत्व करना है। वह अध्यात्म ही समाज का नेतृत्व करेगा, जिसमें समाज का पथ प्रशस्त करने की पीड़ा है।

शांतिकुंज प्रतिनिधि ने जीवन मूल्यों के विकास के संदर्भ में बताया कि भाव संवेदनाएँ जागेंगी, तभी जीवन मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा होगी। हम अपनी संवेदना जगायें और सोचें कि दूसरों के पास साधन नहीं हैं तो हम इतने साधन क्यों इकट्ठे करते जायें? जीवन की प्रसन्नता आंतरिक प्रसन्नता में खोजें। बुद्धिवाद बढ़ा तो जीवन मूल्य घटेंगे और ब्राह्मण जागा तो संपदा का सदुपयोग होने लगेगा, सतयुग की वापसी होगी। सतयुग आयेगा तो सद्गुणी व्यक्तियों के समाज के रूप में आयेगा।

संगोष्ठी में उपस्थित प्रतिष्ठित मनीषी-विद्वान श्रोता महानुभाव

अपने सारगर्भित उद्बोधन में उन्होंने कबीर शांति मिशन द्वारा चलाये जा रहे कार्यों की भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि महात्मा कबीर व्यावहारिक ज्ञान और सामाजिक एकता के प्रणेता हैं। वे ही इस युग में पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के रूप में अवतरित हुए हैं। उनके दर्शन का विस्तार मानवता के लिए परम कल्याणकारी है। उन्होंने श्री राकेश मित्तल-आई.ए.एस. द्वारा केन्द्र और विभिन्न राज्यों में की गयी सेवाओं की भी सराहना की।

समारोह के मुख्य अतिथि महामहिम डॉ. बी.एल. जोशी थे, अध्यक्षता श्री रमेशचंद्र त्रिपाठी ने की। इस अवसर पर कबीर शांति मिशन के लखनऊ इकाई के अध्यक्ष न्यायमूर्ति एससी वर्मा, श्री त्रिपाठी जी, डॉ. जगदीश गाँधी और कबीर शांति मिशन के संस्थापक अध्यक्ष व समारोह के प्रमुख आयोजक श्री राकेश मित्तल-आई.ए.एस. मंचासीन थे। चुने हुए अति महत्त्वपूर्ण विद्वज्जनों की इस सभा में प्रतिष्ठित न्यायविद्, प्रशासनिक अधिकारी, शिक्षाविद, साहित्यकार जैसी प्रतिभावान विभूतियाँ विराजमान थीं।

महामहिम का संदेश

समारोह के मुख्य अतिथि महामहिम डॉ. बी.एल. जोशी ने चर्चा के विषय को अत्यंत प्रासंगिक बताते हुए कहा कि आज ज्ञान की कमी नहीं है। जीवन मूल्यों से अवगत कराने के लिए अनेक मार्गदर्शक हैं, लेकिन जाना हुआ ज्ञान तब तक उपयोगी नहीं होता, जब तक कि वह जीवन में न उतर जाये।

महामहिम ने मुख्य कमी शिक्षा के माध्यमों को बताया। उन्होंने कहा कि व्यक्ति की पहली पाठशाला उसका परिवार है, जिसे पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। परिवार बच्चों का पालन तो करते हैं लेकिन वे जिस पौधे को सींच रहे हैं उसे कैसा बनाना है इसकी ओर ध्यान नहीं दिया जाता। स्कूल, कॉलेजों को उन्होंने दूसरी पाठशाला बताते हुए कहा कि विद्यार्थियों में आज ज्ञान नहीं, डिग्री की चाह है। वहाँ हड़ताल, नकल और गुरुजनों के अपमान की परम्परा विकसित होती जा रही है। विद्यार्थियों में जीवन मूल्यों के समावेश के लिए उद्देश्यपूर्ण शिक्षा व्यवस्था के पुनर्जन्म की आवश्यकता है।

लखनऊ में जन्म शताब्दी का उत्साह : अब जोन मुख्यालय बना

अपने लखनऊ प्रवास के समय २४ अप्रैल को आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी वहाँ चल रही उपजोन स्तरीय कार्यकर्त्ता गोष्ठी में भी पहुँचे और भावी सक्रियता से संबंधित उनका मार्गदर्शन किया। यह गोष्ठी सजल श्रद्धा आरोग्य धाम, सीतापुर रोड़ पर शांतिकुंज के वरिष्ठ प्रतिनिधि डॉ. बृजमोहन गौड़, डॉ. ओ.पी. शर्मा, मध्य जोन प्रभारी श्री वीरेन्द्र तिवारी तथा मेजर वी.के. खरे की मुख्य उपस्थिति में आयोजित थी। इस अवसर पर उन्होंने लखनऊ को बड़े दायित्व प्रदान करते हुए उसे उपजोन से जोनल केन्द्र बनाने की घोषणा भी की। इस अवसर पर उपजोन से सम्बद्ध चारों जिले-हरदोई, सीतापुर, बाराबंकी, रायबरेली और लखनऊ जिले के सातों जोनों के लगभग ७०० कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

आदरणीय डॉ. साहब लखनऊ उपजोन की गोष्ठी को संबोधित करते हुए। साथ में शांतिकुंज प्रतिनिधि डॉ. बृजमोहन गौड़

जन्म शताब्दी वर्ष में कार्यकर्त्ताओं की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए आदरणीय डॉ. साहब ने जन्म शताब्दी तीर्थयात्राओं को सफल बनाने संबंधी मार्गदर्शन दिया। उन्होंने कहा कि यह परिवर्तन के महान क्षण हैं। युगऋषि के जन्म शताब्दी वर्ष में उनकी प्रखर प्राण चेतना के प्रवाह से कोई वंचित न रह जाये, ऐसे प्रयास हमें करने चाहिए। मानवता के जीवन-मरण की निर्णायक वेला में हममें से किसी को भी पीछे नहीं रहना है। यही अपनी पावन गुरुसत्ता के जन्म शताब्दी वर्ष में हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

गोष्ठी के प्रेरक बिंदु

➢ पूज्य गुरुदेव सच्चे ब्राह्मण थे। हम भी सच्चे ब्राह्मण, संत, पुरोहित बनें। पूज्य गुरुदेव कहते थे-बेटा! मैं जीवनभर प्यार बाँटता रहा हूँ, आप भी वही करें, सब अपने बनते चले जायेंगे। दूसरों के दुर्गुण देखना ब्राह्मण की प्रवृत्ति नहीं है।

➢ यह परिवर्तन की विशिष्ट वेला। २०१३ तक केवल मिशन के लिए ही समर्पित रहें, व्यक्तिगत कार्य बंद करें।

➢ सदा युवा रहो, आशावादी बनो, गुरु के वचनों पर विश्वास रखो।

➢ नैमिषारण्य तीर्थ को जाग्रत् तीर्थ बनाना है।

➢ मीडिया में सत्प्रवृत्ति संवर्धन के समाचारों को प्रोत्साहित करें।

उल्लेखनीय उपलब्धियाँ

➢ उपजोन में संगठनात्मक स्वरूप को सुदृढ़ करने के लिए वाहन की आवश्यकता प्रमुखता से अनुभव की गयी। शांतिकुंज प्रतिनिधियों के आवाहन पर कार्यकर्त्ताओं ने इसके लिए तत्काल ₹ २,७०,००० के अनुदान के संकल्प लिये।

➢ मध्य जोन में ३.५० लाख मंत्रलेखन पुस्तिकाएँ साधकों द्वारा लिखने, ११,६५१ समयदानी तैयार होने, सृजन महाकुंभ के लिए १७ करोड़ रुपये एकत्र होने की जानकारी दी गयी। सभी उपजोन प्रतिनिधियों ने अपनी सक्रियता का लेखाजोखा प्रस्तुत किया।

➢ ३-३ ज्ञानरथों की शोभायात्राएँ १ मई से अक्टूबर २०११ तक निकलेंगी। हर जिले में छोटी-छोटी यात्राएँ निकाल कर ज्ञानरथ से जुड़ेंगे। कुल २१ गाड़ियाँ लगायी जायेंगी।

➢ गुरुपूर्णिमा से वृक्षारोपण का व्यापक अभियान आरंभ होगा। एक करोड़ वृक्ष लगाने के वृक्षगंगा अभियान में भागीदारी करेंगे।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी युग चेतना ट्रस्ट शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा सेंचुरी ऑफसेट प्रिंटर्स,ऋषिकेश में मुद्रित। संपादक - वीरेश्वर उपाध्याय, पता:- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तरा.) पिन 249411. फोन- (01334) 260602, 261955 फैक्स - 01334-260866

सदस्यता, पूछताछ आदि के लिए फोन नम्बर - 09258369725, 01334-260602 एक्सटेंशन 167 से प्रातः 8 से सायं 5 के बीचे संपर्क करें।

RNI-NO.38653/80
R.No.UA/DO/16/2009-11
LICENCE TO POST
W.O. PREPAYMENT
vide No. WPP/04/05
RENEWED UP TO 2011